उस जनपद का कवि हूं [illegible]
अरधान (कविता संग्रह : 1984)

सी-50, गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—4700

भारत-गाथा

कवि

डॉ॰ रामकृष्ण शर्मा
एम. ए. (हिन्दी-अँग्रेजी) पीएच. डी.
प्राध्यापक, स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग,
महारानी श्री जया महाविद्यालय,
भरतपुर (राजस्थान)

प्रकाशक

भारती पुस्तक मन्दिर

भरतपुर (राजस्थान)

प्रकाशक ★

भारती पुस्तक मन्दिर
जनरल अस्पताल मार्ग,
भरतपुर (राजस्थान)

●

© सर्वाधिकार लेखक के आधीन ★

●

प्रथम संस्करण ★

१४ जनवरी, १९८६
मकर सक्रान्ति स २०४२ वि०

●

मूल्य : पैंसठ रुपये

●

मुद्रक ★

प्रेम प्रकाशन, सिलैण्डर प्रिंटिंग प्रेस
दरवाजा, भरतपुर (राज०)

उस जनपद का ... हूँ
अरथान (कविता संग्रह : 1984)
: सी-50, गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003



सूल सब फूल होंय, भँवर हू कूल होंय,
घने पीर पादप हू पल में अमूल हों।
तारे प्रतिकूल केते हियरा में हूल होंय,
केती हू कवित्त माँहि कविन की भूल हों॥
तार तार तूल होंय, रेसम दुकूल होंय,
वनत रसाल सुचि वोये जो बबूल हों।
वाधा गिरि धूल होंय, दोस निरमूल होंय,
वाल हू न बाँको जो पै ईस अनुकूल हों॥

गुरु-वंदना



रूप में तिहारे सुनिहारे विधि विस्नु सिव,
चरन तिहारे ईस लोक दरसैया हैं।
झुकि जात माथ, झरें भाव के प्रसून सुचि,
मरन तिहारी तीनों ताप विनसैया हैं॥
बरद गिरा के गुनी सुवन ! सुनाम धन्य !
त्यारे ही असीस सों कवित्त सरसैया हैं।
भारती के नन्दन विराजें रामानद जामें,
हम तो रे भैया ! वाई देस के रहैया हैं॥



उस जनपद का कवि हूं (
परयान (कविता संग्रह : 1934)
: मो-50, गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

महाकवि भारतीनंदन कौ आसीस



सारदा के प्यारे, मेरे पूत से दुलारे कवि,
रामकृस्न भारत की महिमा बखानी है।
भाव की सुगन्धन सों पूरित प्रसूनन की,
गूँथि छन्द माल पूजी मातु ब्रजबानी है॥
तीरथ, पहार, नदी, नारी औ महान नर,
कीरति अपार नाहीं बानी में समानी है।
भारत की महिमा को मरम धरम मानि,
धरती पै सुरग की करी अगवानी है॥



नमन

भारत की पुनीत बसुन्धरा देव-भूमि के रूप में गौरव-गरिमा सों विभूसित रही ऐ। या भूमि की रज माँहि जगत के स्वामी साक्षात ब्रह्म समै समै पै अनेकानेक रूप धारन करिकें अवतरित होते रहे ऐं। ई पुन्य-भूमि राम अरु किसन कन्हैया की लीला भूमि रही ऐ। याई भू मों रीझि कें पुन्य-सलिला भगवती भागीरथी सुरगधाम कूँ तजि कें आजहू याकी रज कूँ सींचि सींचि कें धन्य ह्वै रही ऐं। भगवान भास्कर की आत्मजा, साँवरे कन्हाई की प्यारी, ब्रज जनन की दुलारी जमुना हू याई भूभाग सों रीझि कें याको सिंचन करि रही ऐं। हिमगिरि अरु गिरिराज महाराज हू याकी सोभा कूँ आजहू बढ़ाय रहे ऐं अरु सिगरे तीरथन को सिरताज पुस्कर हू ह्याँई बिराजि रह्यौ ऐ।

या पुण्य भूमि, देवधरा की महिमा कौ गायन करिबे की सामर्थ्य महेस, गनेस अरु दिनेस में हू नाँय। सेसनाग सहस्र मुखन सों हू याकी महिमा कौ गायन नाँय करि सकें। या भूमि पै जान जनम लै लीयौ, बू धन्य है गयौ। याकी रज कूँ देवताऊ निरन्तर तरस्यौ करें। धन्य है ई पुण्य भूमि अरु धन्य हैं याके रहैया!

जहाँ कोटि-कोटि वाद्य वृन्द बजि रहे होंय, वहाँ तूती की मंद धुनि कूँ कौन सुनि सकै? तऊ बू बजती रहै अरु अपने प्रानन की झंकार सों आरती उतारती रहै। सो अनेकानेक सुरीले रसीले वाद्य वृन्दन के बीच मेरे नेह भरे प्रानन की बीना हू बजिबे लगी तौ यामें अचमौ काय?

याके मंद-मंद सुर हू आरिती माँहि समर्पित हैं।

—रामकृष्ण

उस जनपद का कवि हूँ (. . . . .),
अरघान (कविता संग्रह : 1984)

: मौ-50, गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

भारत महिमा

जो मेरी बिनती सुनों, हे कृपालु ब्रजचन्द !
नर पसु पछी जो बनू, जनम भूमि हो हिन्द !!
× × ×
गंगा जमुना हिमगिरी, आम्र कदम अरविन्द।
तजों सुरग अपवरग हू, जनम भूमि हो हिन्द ॥
× × ×
जा रज रीझें स्यामजू, आन लये अवतार।
ताही रज में जनम मोहि, दीजो वारम्बार॥
× × ×
कलित कलिन्दी तीर पै, कल कदमन की छाँह।
रास रचत माधव लखें, लहे लाड़िली बाँह॥
× × ×

ब्रज भूमि पै स्याम सखा बनिकें, नँदराई की धेनु चरायौ करौं।
नित प्रात औ साँझ कमोरी लये, खिरकान में दूध दुहायौ करौं॥
कभूँ बैठ कदम्ब की छाँहन में, जुरि ग्वालन सों बतरायौ करौं।
चाहे पंछी, पसू, नर, पाहन ह्वै, ब्रज भूमि पै जीवन पायौ करौं॥

—रामकृष्ण

उस जनपद का कवि हूँ (. . . . . .)
प्रस्थान (कविता संग्रह : 1984)
: सी-50, गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

भारत
गाथा

जाही देस माँहि गंग जमुन की धार वहैं,
कूलन कदम्बन तमालन की छैया हैं।
जाही हेत छाँड़ि छीर सागर रमा के कंत,
नर रुप धारे व्रज बीथिन नचैया हैं ॥
जहाँ हिमगिरि के उतुंग सीस उमा संग,
राजें योगिराज कालकूट के पिबैया हैं।
ज्ञान गुरु सोंने की चिरैया नाम पायौ जानें,
हम तो रे भैया! वाई देस के रहैबैया हैं ॥



नारी जाकी सीता अरु ग्रन्थ जाकौ गीता जहाँ,
तीन घूँट माँहि पूरे सागर पिबैया है।
तीन पैंड़ माँहि जहाँ नापि लीने तीनों लोक,
चीर दीये सुत, अस्थिदान हू दिबैया हैं ॥
रंक मीतहू कूँ जहाँ लोकन के राज सौंपे,
भाव हेत झूँठे बेर साग के खवैया हैं।
जहाँ दानवीर मानवीर ज्ञानवीर भरे,
हम तो रे भैया! वाई देस के रहैबैया हैं ॥



सावित्री ने जम जीत लीनें सत्यवान जहाँ,
सत्यहू के हेत हरीचन्द हू बिकैया हैं।
अनुसूया अत्रि के कुटीर माँहि तीनों देव,
छवि छाये छौना बनि छीर हू पिवैया है॥
प्रान जाँहि, पन नहीं जानें पावै याही हेत,
दसरथ जैसे नृप प्रानन तजैया हैं।
भरत से भाई, पौनपूत अनुयायी जहाँ,
हम तौ रे भैया! बाई देस के रहैवैया हैं॥



नर को नमूना जहाँ रामचन्द और नारी,
सीता सम सील साँच धरम धरैया है।
गुरु जहाँ धौम्य अरु सँदीपन रिसिराज,
सिस्यन में किसन सुदामा गुरु भैया हैं॥
रसिक जनन सों समाज मान भग नाही,
प्रेयसि रिझाय मान भंग करवैया है।
जहाँ दही दूध के सरित उमगे हैं सदाँ,
हम तौ रे भैया! बाई देस के रहैवैया हैं॥

उस जनपद का कवि हूँ (
प्रस्थान (कविता संग्रह : 1984)
सी-50, गोरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

जहाँ के दुस्यन्त रसराज के बसन्त माँहि,
सुमन सुकन्तला को सुरस पिवैया हैं।
पुरुरवा प्रीत अरु विक्रम अकूत धारे,
उर्वसी सी अप्सरों कूँ उर में बसैया हैं॥
ऊसा अनिरुद्ध, नेहो मालविका–अग्निमित्र,
प्रेमीजन प्रीत हेत प्रानन रिझैया हैं।
जामैं गीत गामें ढोला मारू के गवैया नाम,
हम तौ रे भैया! वाई देस के रहैवैया हैं॥



जहाँ भये भागीरथ, भू ते नभ जोरि दीयो,
पुरखन तारिबे कूँ तप के करैया है।
ऊँचे उठे धरा ते सुरग माँहि पाई पैठ,
ईस हू के धारे हेत गंग के रिझैया हैं।
झेलवे कूँ वाकी धार काहू के बिसात नाही,
तीन लोक ईस भार, सीस पै धरैया हैं।
ऐसी गंग सुरग सों जाकी धरा सींचो आय,
हम तौ रे भैया! वाई देस के रहैवैया है॥



सिसु प्रहलाद निज जनक की भीति छोरि,
भोले भाव हू ते ईस नाम के जपैया हैं।
हिरनाकुस होरिका दई जो अपार पीर,
गिरि ते गिराये कालकूट हू पिबैया है॥
मोमें तोमें खभ अरू खड़ग में व्याप्यो ब्रह्म,
आतम अमर अविनासी ना नसैया हैं।
रीझे नरसिंह भक्त हेत फार्‌यो दैत्य वक्ष,
हम तौ रे भैया! वाई देस के रै्‌हैबैया है॥



जहाँ ध्रुव जैसे सिसु सैसव में सिद्धि हेत,
सघन विजन वन तप के तपैया हैं।
निज जननी की पीर दाहक विमाता भीर,
भोरे उर भूरि भक्ति भाव उमगैया है॥
कोमल कलित तन दारुन दुसह्य दुःख,
भीत भूत भैरव भू क्लेस हू जितैया है।
रीझे ईस दीयो ध्रुव अटल अमंद पद,
हम तौ रे भैया! वाई देस के रै्‌हैबैया हैं॥



उस जनपद का कवि हू (' २ · १·-२१ /
अरमान (कविता संग्रह : 1984)
: मी-50, गोरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

आठों अंग बक्र विप्र बालक बिलोकि नृप,
जनक विदेह ज्ञानी भरम भरैया हैं ।
देख अंग-अंग अति विद्रुप कुढ़ब ड़ौल,
हँसि-हँसि हेर मरजाद हू हरैया है ॥
हेर वाकी ओर बटु बोल्यौ हे रे चर्मकार !
काहे तन हेर हँसि-हँसि के रिझैया है ?
हार्‌यौ वेद बानी में जनक, गुरु मान्यौ विप्र,
हम तौ रे भैया ! बाई देस के रैहैया है ॥



नचिकेता उर में उजारा ब्रह्म ज्ञान केरौ,
सत्त के सहारे सुरलोक सधवैया है ।
तोरे भू के सीव सो सदेह जमलोक माँहि,
निगम अगम ज्ञान जम हू जितैया है ॥
माया के तिमिर माँहि मोहमयी मनुजाई,
पथ में हिरानी सो सुपंथ दरसैया है ।
नर बने नारायन, भू सों दिवि जोरि दीये,
हम तौ रे भैया ! वाई देस के रैहैया है ॥



एक राम ऐसे भये तात मात वात हेत,
छाँड़ि राजपाट जाय कानन बसैया हैं ।
एक राम परसु की धार सेंस वाहू काटि,
जननि सुवारि पितु वचन रखैया हैं ॥
एक छाँड़ी नारि तुच्छ जन हू की वात जानि,
दूजे छत्र छत्रिन सों छीन द्विज दैया है ।
छत्रिन में राम द्विज वस में परसराम,
हम तौ रे भैया ! वाई देस के रै्हैवैया है ॥



जाही भूमि हेत छीरं सागर हू छोरि दीयौ,
आन बने नद जू के आँगन के छैया है ।
जमुना के तीर पै कदम्बन की छायन में,
सीतल सुगन्ध मंद पौन पुरवैया है ॥
नागरी नवेलिन के झोर-झोर जुरि जाँहि,
बीच-बीच ता ता थैया रास के रचैया है ।
तीन लोक ठाकुर सो ठुमकत जाही ठौर,
हम तौ रे भैया ! वाई देस के रै्हैवैया है ॥



उस जनपद का . हू (...
सरथान (कविता संग्रह : 1934)
सी-50, गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

करि-करि सुधि जहाँ साँवरे कन्हाई टेर,
भरि-भरि आवें चित धीर न धरैया हैं ।
वंसीवट तट पट पीत फहरान जामें,
लट लटकनि लाल नंद के रिझैया हैं ॥
गोपिन के संग भरि अंग में अनंग रंग,
कुंजनि में संग-संग रास के रचैया हैं ।
जाकी माँटी चाटी तीन लोकन के ईस हू नें,
हम तौ रे भैया ! वाई देस के रहैया हैं ॥



जाके नर नारी वाल वृद्ध कान्ह-कान्ह टेरे,
फेर-फेर आवें सुधि बाँसुरी वजैया हैं ॥
गोपिन के प्रान प्यारे ग्वाल रिझवान हारे,
वंसीवट तट चोरि चीर के चुरैया हैं ॥
नाग के नथैया, दधि-माखन खवैया, वन,
गाय चरवैया वलदाऊ जू के भैया हैं ।
याकी छवि हेरिवे कूँ जामें देव-देव आमें,
हम तौ रे भैया ! वाई देस के रहैया है॥



जहां हरिजन हेत हरी धाये धाम छोरि,
पगन उपानहू में बास के करैया है।
सत गही प्रतिमा भगत उर जागी पीर,
रोवत रैदास हेत सपन दिवैया हैं ॥
मोय मेरे भगत सों वेग मिलवा रे संत !
वाही के उपानहू में प्रान यों बसैया हैं।
जाही देस हरिजन पगन में ग्यानी लोरें,
हम तौ रे भैया ! वाई देस के रैहैवैया हैं ॥



बालमीक डाकू के करम करें बन माँहि,
आते जाते पथिक के प्रानन हरैया है।
सतन की संगति सों मोह काम कोह छूट्यो,
राम नाम हू के आँख उलटि जपैया है ॥
ऐसो लागी तारी तन दीमक दिमोला छाये,
ब्रह्म के समान ज्ञानी ज्ञान सों दिपैया है।
पाँचो वेद रामायन फूट्यो जा धरा की तेज,
हम तौ रे भैया ! वाई देस के रैहैवैया है॥



उस जनपद का कवि हूं ...
प्रस्थान (कविता संग्रह : 1954)
: सी-50, गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

धनि रिसीराज याज्ञवल्क्य रामकथा गाय,
भगति पीयूष पुन्य प्रान पुरवैया हैं।
धनि माता मैत्रेयी औ गारगी सुगुन खानि,
पूरन पुनीत नारि कीरत धरैया हैं॥
धनि उरगारी सुनि कथा काग आनन सों,
माया की मरीचिका सुज्ञान सों नसैया हैं।
जाके नर-नारी खग राम की कथा के पात्र,
हम तो रे भैया! वाई देस के रैहैवैया हैं॥



सारे विस्व माँहि सब धरम के देव गनों,
जेते साधु संत भू पै जनम धरैया हैं।
सबकूँ नवाऊँ सीस पगन की धूरि धारों,
मोहमद ईसा ईस रूप प्रगटैया हैं॥
धनि महावीर, बुद्ध दिव्य अवतार जेते,
धरम धिराने, पाप पीर के नसैया हैं।
पूजित तेतीस कोटि देव मेरे एक देस,
हम तो रे भैया! वाई देस के रैहैवैया हैं॥



धनि-धनि तीरथ सुधाम मेरे देस माँहि,
दरस परसि मुक्ति मोद के दिवैया हैं ।
परम पुनीत बद्रीनाथ औ केदार धाम,
संगम त्रिवेनी भव भीतिहू नसैया हैं ।।
विधि कौ पुनीत धाम पुस्कर सुतीर्थ गुरु,
द्वारिका के नाथ मन प्रान के रिझैया हैं ।
कन्यका कुमारी सेतुबंद तीर्थ धाम जामैं,
हम तौ रे भैया ! वाई देस के रै्हैया हैं ।।



देखिबे के जोग भूरि धाम मेरे देस माँहि,
दिसि-दिसि हेर-हेर हिया हुलसैया हैं ।
कासमीर माँहि तीन लोक छवि आनि छई,
भू पै सुरलोक सुसमा सी बगरैया हैं ।।
कोऊ देख पावैं कहूं ऐलोरा अजन्ता छवि,
नर तन पाय जग जनम जितैया हैं ।
चन्द्र चन्द्रिकान छवि छीरधि सुहाती ताज,
हम तौ रे भैया ! वाई देस के रै्हैया हैं ।।



उस जनपद का कवि हूं ...
प्रस्थान (कविता संग्रह : 1984)
: सी-50, गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

जाही देस माँहि विक्रमादित्य सुन्यायी नृप,
देवदूत सिंहासन सांस पैं सधैया हैं।
राज के समाज में सुहाये कवि कालिदास,
कीरति कलित कलिकाल ना नसैया हैं ॥
आजहू उज्जैन की सुकीरति कलित राजै,
छिप्रा के प्रवाह में उछाह उमगैया हैं ।
ऐसौ देस जाके नृप न्याय की तुला में पूरे,
हम तौ रे भैया ! वाई देस के रहैया हैं ॥



जीवन कौ ध्येय भोग भोगिवे कूँ मान्यौ नाँहि,
नर तन पाय सुचि धरम धरैया हैं।
अर्थ अरु काम कोरे साधन सुमुक्ति केरे,
नीर विच नीरज ज्यों करम करैया हैं ॥
करम कौ लेत अधिकार फल ईस हाथ,
ईत भीत जीत पट रिपुन रितैया हैं ।
छाँडे लोक सुख परलोक सुख सार जहाँ,
हम तौ रे भैया ! वाई देस के रहैया हैं ॥



जहाँ के समाज माँहि द्विज सीस रुप धारे,
तजि कें विलास वेद वानी के रचैया हैं।
ज्ञान ध्यान करम धरम सुविचार सोधे,
जीवन कौ ध्येय मुक्ति मोद सिखवैया हैं ॥
रिसी सुनः सेप कुत्स दीर्घतमा याज्ञवल्क्य,
ध्यान की समाधि ब्रह्म रुप के दिखैया है।
जहाँ विस्वामित्र जैसे राजरिसी विप्र बने,
हम तौ रे भैया ! वाई देस के रैहैया है ॥



उदर कौ रूप धारे वैस्य को बरन सोहे.
पुन्य की कमाई पन्य पोसन करैया है।
तुला के अधार तौलि वनिज सुनीतिधारी,
अरथ उछाह में हू धरम धरैया हैं ॥
दंद फंद रहित निर्द्वन्द्व है बढावे भूति,
अनुचित लाभ कोऊ कोस न भरैया है।
स्रम की कमाई ते करत नित दान पुन्य,
हम तौ रे भैया ! वाई देस के रैहैया है ॥



उस जनपद का कवि हूँ (
परख्यान (कविता संग्रह : 1934)
: सी-50, गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

कासीवासी तुलाधार वैस्य कौ जनम धार्यौ,
वनिज करम हू में धरम धरैया हैं।
लेंन दैन माँहि कहूँ कवहूँ न खोरि कीन्ही,
असत समाज हू में सत के रखैया है।।
वैभव विपुल छोरि लालच सों मुख मोरि,
तोरि मोह जाल वलिकाल के जितैया है।
वनिक वरन हू में काज कीन्हे द्विज के रे,
हम तौ रे भैया! बाई देस के रहैवैया हैं।।



वीरवर छत्री जहाँ भुज रूप धारे सोहें,
भुज की कमाई सीस छत्र के धरैया है।
सोहत सुसिंहासन राज काज सैन साज,
देस हित जूझें अरि प्रानन हरैया हैं।।
द्विज धेनु धरम सुकरम की आन धारें,
दीन प्रतिपाल भुवपाल भू जितैया है।
आन बान हेत प्रान तजत न संक मानें,
हम तौ रे भैया! बाई देस के रहैवैया हैं।।



छत्रिन के बाँकुरे सुवन अरि जूथ जोहें,
अंग में उमंग रन रारि के रचैया हैं।
बैरिन के ब्यूह कूं विलात ज्यों समीर घन,
मारि के मरोरि, मारकाट के मचैया हैं॥
चाले तीर तेगु करवान नेजा कारतूस,
अरि की रुधिर धार होरी हू खिलैया है।
काटि-काटि बैरी रन भूमि पाटि दीन्ही जहाँ,
हम तौ रे भैया ! वाई देस के रहैया हैं॥



सेवक समाज के सो पग उपमान धार्यो,
करत सुसेवकाई नेम के निभैया है।
सहज विनीत निज सीस कूं नवाय चले,
स्रम करि करि नित उदर भरैया है॥
मधुर बचन सुचि आचरन धीर धारे,
सेवक करम करि स्वामिन रिझैया हैं।
जहाँ के समाज रूपी तन के सुपग ऐसे,
हम तौ रे भैया ! वाई देस के रहैया हैं॥



उस अनपद का . . . .
बरदान (कविता संग्रह : 1984)
: मो-50, गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

भारती की आरती में वंदना के गीत गूँजे,
मानस में रीझि रीझि और हू रिझैया हैं।
रस के अपार पारावार माँहि बूड़ि बूड़ि,
तलहू में जाय मनि मानिक जुटैया हैं॥
भूले सब वैर औ विरोध बिसराय बैठे,
एक दूसरे को आनि कंठ ते लगैया हैं।
भूरि भासा कलिक ज्यों भारती की बेल सोहें,
हम तौ रे भैया ! वाई देस के रहैया हैं॥



सब ही सुतंत्र कोऊ काऊ पै न राज करै,
वेई राज करें जो पै म्हाँई के बसैया हैं॥
काऊ देस माँहि न परायौ कोऊ चेंट करै,
"जीओ और जीने दो" के पालन करैया हैं॥
पंचसील गुट निरपेक्षता कौ नेंम साँचौ,
कोऊ याय तोरै वाकूँ पाठ के पढैया हैं।
नीति धारी मीत औ अनीति धारी अरि जाकौ,
हम तौ रे भैया वाई देस के रहैया है॥

सब सौं है प्रीत भीत कबहूँ न काऊ संग,
वसुधा कुटुम्ब नर नारि भैन भैया है।
पर उपकारी रखवारी सरनागत की,
मीत के रखैया अरि जूथ के जितैया हैं॥
मान मरजादा हेत प्रानन कौ त्याग करें,
नेह के निभैया, अभिमान के रितैया हैं।
जहाँ नर नारी बाल वृद्ध जियें जीवट सों,
हम तौ रे भैया! वाई देस के रैहैवैया है॥



नेता मेरे देस के सुनीतिधारी साँचे भये,
जनता कौ पालन सुपोखन करैया है।
दादाभाई, मालवीय, गोखले औ लाजपत,
देस की सुतंत्रता के सुपने सजैया है॥
धनि सो सुभास जासों अरि के हवास खोये,
बापू औ जवाहर सुराज के सजैया हैं।
जनता कौ जनता से जनता के हेत राज,
हम तौ रे भैया! बाई देस के रैहैवैया है।



उस जनपद का
प्रस्थान (कविता संग्रह : 1934)
सी-50, गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

भारत

दशा

आजि कछू देस कौ कुभाग कहूँ दीख रह्यौ,
जनता कूँ खाये जात, जनता-रखैया है ।
रावन औ कंस के करम कछु कीये जात,
पैदा है पिसाच पाप घट के भरैया है ॥
धेनु बनी धरती तिनूका मुख माँहि रोत,
लेगे अवतार दुस्ट दलन करैया है ।
जहाँ पुनि धरम सुकरम कौ राज होय,
हम तौ रे भैया ! वाई देस के रहैया है ॥

कहा दसा करी मेरे देस की ओ राजा राम !
मोहन कहाँ हो ? हमारे जग बिसरैया है ।
दीनन कौ दमन मगन साधु सन्त सुखी,
धरम करम सुविचार बिनसैया है ॥
चहुँ ओर जाल सौ पुरयौ है पाप कर्म केरौ,
जात निरदोस षडयंत्र मैं फसैया है ।
जामें अधरम के विनास हेत आते रहे,
हम तौ रे भैया ! वाई देस के रहैया है ॥

जाकी छवि हेर हरि लोक हू हिरानों होय,
चहुँ दिसि सुसमा सुसिन्धु सरसैया है ।
कूप वापी वाटिका विटप वर वल्लरीन,
कुसुम कलीन मिस रस बरसैया है ।।
सोहत सुभग सर सरित सलिल पूरे,
मंडित तरंग रुचि ताल औ तलैया है ।
जहाँ पग-पग पै प्रमोद के पयोधि सोहैं,
हम तौ रे भैया ! वाई देस के रहैया है ।।



कदम कदम पै कदम्ब कुंज केलि पुंज,
कोकिल कलित कूकें पुंजनि पपैया है ।
तरनि तनूजा तीर नाचत मयूर मंजु,
सुक सारिकाहू वेद बानी के जपैया हैं ।।
धरा की नवोढा जहाँ हरित दुकूल धारे,
प्यारे नभ हेर हेर हिये में लजैया है ।
चहुँ ओर नाचत ज्यों नर्त्तकी निसर्ग छटा,
हम तौ रे भैया ! वाई देस के रहैया है ।।



उस जनपद का
प्रस्थान (कविता संग्रह : 1934)
सी-50, गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

कोऊ कवि वरनि न पावै या छटा कौ छोर
छीरधि लौ छाई जो त्रिलोक ना समैया हैं ।
दच्छिन के नीरधि सों उठत तरग जाकी,
कन कन सींचत हिमाद्रि लौ उछैया हैं ॥
द्वारिका सों उठत हिलोर प्राची छोर छयें,
दिसि दिसि दुनी द्वार सोई छवि छैया हैं ।
बरनि न पामें हंस वाहिनी विधाता ताहि,
हम तौ रे भैया ! बाई देस के रे हैवैया हैं ॥



रितु-क्रम ऐसौ जैसौ हेरे न हिरात कहूँ,
विधना हू रीझि के सँवारि सो बनैया है ।
चार चार माह की रची हैं तीन रूरी रितु,
चारु चक्र माँहि मन मुदित जमैया हैं ॥
बीच बीच माँहि तीन नूती रितु जोरि दीनी,
तिनमें निसर्ग निज सुसमा सजैया है ।
बारह हू माह जहाँ ललित लुनाई छाई,
हम तौ रे भैया ! बाई देस के रे हैवैया हैं ॥



आवत असाढ घन उमड़ घुमड़ छावे,
छिति ते छितीस लौं छ्छारे छवि छैया हैं।
बरसत वादरा परसि भू के अग अंग,
सग सग दामिनी की दुति दमकैया है॥
निरझर झर झर सरित सुगति झूमें,
वापी कूप उमगत सर सरसैया है।
यच्छ विरही के हेत वादरा हू दूत बने,
हम तौ रे भैया! वाई देस के रैहैवैया हैं॥



सावन की सोभा तीन लोक हू सों न्यारी इहाँ,
विटप विहँसि वल्लरीन छवि छैया है।
हरित भरित भू के वैभव विपुल राजि,
भू ते दिवि छोर लों विभूति वगरैया है॥
सुक पिक सारिका पपीहा कल बोल बोले,
तन मन माँहि मोद मंजुल भरैया है।
गावत मल्हार नारि झूला औ हिंडोला झूले,
हम तौ रे भैया! वाई देस के रैहैवैया हैं॥



उस जनपद का
प्रस्थान (कविता संग्रह : 1934)

50, गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

तीजन के मेले में सुरंग साज सजीं नारि,
झमकत दमकत गावत गवैया हैं।
धानी चीर घूँघट में छुपें न छुपाये नैंन,
कामिन कटाच्छ असि धार लौ चुभैया हैं ॥
लचकत कटि मचकत मदमाते अंग,
रंग में अनंग के उरोज सरसैया है।
देख देख रीझें रसराज के रसिक जहाँ,
हम तौ रे भैया! वाई देस के रै्हैवैया हैं ॥



धनि धनि श्रावणी कौ कैसौ है पुनीत पर्व,
भैन बाँधे राखी भैया उर हरसैया है।
सूत के दो धागे कैसौ बंधन अटूट बाँध्यौ,
प्रान जाँहि याकी मरजाद न नसैया हैं ॥
रस बरसामते जमाई घर माँहि आमें,
चाँमर सिमैयाँ घृत बूरे के खवैया है।
कोकिल के कंठ कूँ लजाय नारि गारी गावें,
हम तौ रे भैया! वाई देस के रैहैवैया है ॥



भादौ की अँध्यारी कजरारी कारी रैन जोहें,
द्वापर की सुरति सौ हीयौ उरझैया है।
कंस कारावास माँहि वसुदेव देवकी के,
छौना वनि छीरसायी छोभ के नसैयाँ हैं॥
सूप माँहि सिसु धारे जमुना की धार वीच,
सलिल चढ़त ईस पाँव परसैया हैं।
नंद जू के भौन जहाँ लोकन के नाथ पोसे,
हम तौ रे भैया ! वाई देस के रहैया हैं॥



पथार के दमैरा में जुरत नर नारि भारी,
मेले के मिलन उर पीर के नसैया है।
गूँजे गीत गाजे संग वजत विपुल वाजे,
भूषन गों अंग साजे चंग हू गुँजैया है॥
रैन जात, ग्वात जात, रहँट झुलात जात,
जीजा सारी हाँसी ठट्ठे रस वरसैया है।
कोऊ ऐसौ देस ना धरा पै याकी गरि करै,
हम तौ रे भैया ! वाई देस के रहैया है॥



उस अमरत का
सरसान (कविता संग्रह : 1984)
I-50, गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

बाल वृद्ध नारी नर नवल उमंग संग,
देखत सुकौतुक दनुज दलवैया हैं।
रावन की प्रतिमा में भरत पटाखे सुर्री,
राम कौं बनाय रूप आँच सुलगैया हैं॥
फूटि फूटि भटकत अंग अंग राकस के,
कर्म हेत फल देत राम जू गुसैयाँ हैं।
जहाँ देव जीतें औ दनुज दल नासे जाँय,
हम तौ रे भैया! बाई देस के रै्हैवैया हैं॥



झाँझी घट दिवला की जगमग जोति जुरें
पूजि पूजि सरित तरंग थिरवैया हैं।
नाचें गामें झूमि झूमि अलक अधर चूमि,
अगना के अंगन अनग अलसैया हैं॥
कुजनि में छिपत दिपत तऊ तन तेज,
दौरि देत रसिक जनन गलवैया हैं।
जहाँ रसरंग की तरंग सतरंग सोहें,
हम तौ रे भैया! बाई देस के रै्हैवैया हैं॥



चारों मास पावस के साढ सों आसौज ताँई,
रिमझिम छिम छिम वारि बरसैया हैं।
कबहुँ गगन विच स्याम घन घिर जाँय,
मूसल की धार ज्यों हू धार धरसैया है ॥
गग्गगग्ग गरजन तड़क तड़ित पात,
कम्पित कैं गात गात धीर के हरैया है।
कभूँ सात रगन सों इन्द्र धनु मन मोहै,
हम तो रे भैया! वाई देस के रैहैया है॥

❂

कातिक सों होत अथ सरद सुहानी रितु,
दिवस सिराने निसि सीतल सुहैया हैं।
रजत वितान भू ते दिवि तानूँ तानि दीये,
कन कन कनक सुआभ सों पगैया है॥
नदी नद नीर अति विमल सुस्वाद होत,
वन उपवन तरु बेल विकसैया है।
तन माँहि, मन माँहि, मोद न समात जहाँ,
हम तो रे भैया! वाई देस के रैहैया है॥

❂

उप अनगार [illegible]
अरमान (कविता संग्रह : 1934)
I-50, गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

राका की रजनि जामें रजत की रेलपेल,
धरा ते द्यु लोक माँहि मोद वरसैया हैं।
राकापति रजत सुसिन्धु माँहि रूप रासि,
रस्मिवाल सुधा के सुधार भरवैया हैं ॥
जन जन जीव जोंनि जोति जाल ओतप्रोत,
शीतल सुधा के सिन्धु माँहि उतरैया हैं।
अनत अनन्द उमगत जाके ओर छोर,
हम तौ रे भैया ! वाई देस के रैहैवैया हैं ॥



द्वार द्वार दीप माल दिपत दिगन्त दुति,
झिलमिल ज्वाल जाल अमित उठैया हैं।
रूपराशि पगी पट घूँघट की ओट मुख,
चन्द्र हू लजात तम तोम में छिपैया हैं ॥
गोरे भुजमाल में जु थाल दीप पूरे हरे,
ऐसी छवि अवनी में कहूँ ना दिखैया हैं।
पूजत गनेस रमा वजत सुवाद्य वृन्द,
हम तौ रे भैया ! वाई देस के रैहैवैया हैं।



माह् अगहन, प्यारी पिया सो लगावै मन,
हे रे परदेसी ! क्यो हू तन तरसैया हैं ?
यदन नुसीत लागे मनुआं हू भीत भारी,
मदन कदन यों करेजा कसवैया हैं ॥
राति यों मिराति सी सी मुख सों निकरि जात,
दिन तनुताई रैन अनत बढैया है।
जाके नर नारी नित नेह सो रिझावे जीव,
हम तो रे भैया ! वाई देस के रै हैवैया है ॥



आयो पूस माह, अजहुँ न सुधि लीनी नाह,
प्यारो मुख स्याह पाती पीतम पठैया हैं ।
हे रे निरमोही ! काहे विरहा डुबोई अब,
आसरो ना कोई जीव जोति नों बुझैया है ॥
ताही छिन बैठ्यो काग आइके मुड़ेर ऊँची,
गिर्यो रे उझीना, उर आस उपजैया है ।
जाही देस माहि नर नारि नेह कर पूर,
हम तो रे भैया ! वाई देस के रै हैवैया है ॥



उस अवसर का
प्रस्थान (कविता संग्रह : 1984)
५०, मोतीनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

माघ कौ महीना, पीर जात हू सहीना उर,
धीर हू रही ना, कित प्रीतम बसैया हैं।
दिन हू न चैन, बीते क्यों हू ये छमाही रैंन,
निकसें न बैन उर अन्तर रिसैया हैं।
नग की सहेली समझावें हे री भोरी भटू !
पीतम तिहारे जन्म-भूमि के सिपैया हैं।
मातृ भूमि हेतु जहाँ नवल नवोढ़ा तजीं,
हम तो रे भैया ! वाई देस के रैहैवैया हैं॥



फागुन कौ मास, कन-कन में सुवास उर,
हास के विलास अंग अंग हरसैया हैं।
तैसी बहै सीतल सुगंध मंद मंद वाय,
सौरम सुँघाय प्रान पूरि पुलकैया हैं॥
वन उपवन सर सरित सुकुंज पुंज,
मंजुल मिलिन्द मकरन्द हू पिवैया हैं।
सुरलोक हू तें जहाँ सुसमा अनन्त गुनी,
हम तो रे भैया ! वाई देस के रैहैवैया हैं॥



आवै रितुराज सग सुसमा सुराज सोहै,
तन मन माँहि मजु मोद सरसैया है।
बागन में बेलिन मे नागरी नवेलिन में,
नेही जन मन माँहि मधु बरसैया है॥
विहँसि गुलाल मलि कलित कपोल लाल,
ललना के लोचन ललाम अनखैया है।
खेलें जहाँ फाग नाचें चाँचरी सुहाग हेतु,
हम तौ रे भैया! वाई देस के रहैवैया है॥



आयो चैत मास खिल्यो ग्रीसम सुहास, नभ
सूरज को तेज दिन दूनौ अधिकैया है।
दिन अधिकाने, रैन घटत बिलाने भोर,
लगत सुहाने आवें सीतल सुछैया है॥
खेतन में फसल समेट खलिहान सोहें,
मिले की बिनाई पसु पसर चरैया है।
जहाँ वसुधा के वसु धान के निधान भरे,
हम तौ रे भैया! वाई देस के रहैवैया है॥



पूजन चली सु गनगौर गोरी गीत गात,
मोलैंहू सिंगार तन मन हुलसैया हैं।
सीस पै कलस झारी सात पात्र जल पूरि
हरी हरी दूब पै सुमन सरसैया हैं॥
सोहत सुरग परिधान गजगामिनी यों,
फूली फुलवारी ज्यों अनिल लहरैया हैं।
माँगत सुहाग गनगौरि गोरी पूजि जामें,
हम तौ रे भैया ! वाई देस के रे्हैवैया हैं॥

७

मास है बैसाख वामें जमत किसान मास,
कोम भरपूर मूल व्याज सों चुकैया हैं।
चौदी धरें ताक, वह आवत जमत धाक,
जुरत समाज नुकतान हरसैया हैं।
उछरत पाग दिन गवत कन्हैया राग,
मांझ कूँ चौपाल ओझा गोठिया खिलैया हैं,
जामें लोक परलोक दुहुन के सुख सोधें,
हम तौ रे भैया ! वाई देस के रे्हैवैया हैं॥

८

जेठ को महीना तन चुअत पसीना नभ
तपत अरक ज्वाला जाल बरसैया है।
भूते दिवि तानूं होम कुंड सौ दहत जामें,
परि जरि जीउ वन्हि बीच अकुलैया है॥
तर तेऊ नीचौ अब उतरि सुअम्ब गयौ,
नदी नद कूप बापी वारि हू रितैया है।
याह् रितु माँहि रसियान के गवैया जहाँ
हम तौ रे भैया! वाई देस के रहैवैया हैं॥



देस देस व्यापी मेरे देस की सुकीरति यों,
या है मति छेरी कोऊ, नेम के निभैया है।
मीत के तो मीत, बैरी मूल मौ नसानहार,
नहीं बाकूं सार्धे, अकड़ैल के नसैया है।
गहत अहिंसा सौंन मय सों मिताई मानि,
भूल हू मों कायरता उर न धरैया है।
मीतन के मीत, अभिमानी हेत जमदूत,
हम तौ रे भैया! वाई देस के रहैवैया हैं॥



: बी-50, गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

सुनि लेऔ लोग मेरे देस कौऊ सत बात,
चाहौ जो जगत जन सुख मों बसैया है।
घोऊ काऊ उर के सु स्वाभिमान छेरौ जनि,
सब जन हैन मनमान दरसैया है।।
भैया भैया भूलि भेद भरम भुलाय देऔ,
एक ब्रह्म सो ही सब जनम धरैया है।
जाकी बात मानि सब जगत में चैन होय,
हम तौ रे भैया! वाई देस के रहैया है।।



मेरी देस भूतल पै प्रकट्यौ प्रथम जोति,
लौकें ब्रह्म सत् चित् आनँद उछैया है।
जानैं जो भूगोल ताय पूछि लेऔ हिमगिरि,
भू की धुरी सब सों प्रथम प्रकटैया है।।
याके आस पास जो सुवास जोग भूमि भई,
वापै जगती के जन प्रथम बसैया है।
प्रथम सृजन भू कौ प्रथम मनुज बाग,
हम तौ रे भैया! वाई देस के रहैया है।।



भारत महिमा

देव लोक देवगन किन्नर गन्धर्व यच्छ,
इन्द्रपुरी अलका जो नाम सुनवैया हैं।
सब हिम गिरि के विविध सिखरन पैई,
आर्यजन विविध कलान के रचैया हैं॥
नृत्य गान, वाद्य वृन्द जीवन सुरग राज,
अबहू निसर्ग की सुरस वरसैया हैं।
आर्यजन वास भू को प्रथम निवास जो है,
हम तो रे भैया! वाई देस के रैहैया है॥



हिमगिरि के ही उच्च सिखरर समूह माँहि,
बसे हुते पुर सो ही सुरग कहैया हैं।
हमरे ई दादा परदादा देव जाने जात,
विनकोई नृप सुरराज पद पैया हैं॥
ऐरावत, उच्चश्रवा कामधेनु कल्पतरु,
विनकेई वैभव विपुल वगरैया हैं।
जाकी विभुता की प्रतिच्छाया विश्ववैभव ये,
हम तो रे भैया! वाई देस के रैहैया हैं॥



सी-50, गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

वरुण कुबेर सक्र सारद गनेस सेस,
अमर कहाये सत करम करैया हैं।
विनके ही वंसज विलास माँहि बूड़ि बूड़ि,
मृत तुल्य बने मृत्यु लोक के वसैया हैं ॥
छीर साई विस्नु औ कैलासवासी महादेव,
ब्रह्म लोक स्वामी विधि ईस पद पैया हैं।
जाही देस करि ऊँचे करम अमर भये,
हम तौ रे भैया ! वाई देस के रहैया हैं ॥

●

दंड हेत घोर कारावास कौ विधान हुतौ,
नरक कहायौ भूरि भीत सों भरैया हैं।
जमराज जमदूत न्याय कारी दंडधारी,
पापी जन पकरि नरक भिजवैया हैं ॥
दोसी दंड पाहीं निरदोस निरभीक हुते,
दूध पानी न्यारौ न्यारौ न्याव के करैया हैं।
ऐसी न्याय पालिका सुन्यायी जाही देस माँहि,
हम तौ रे भैया ! वाई देस के रहैया हैं ॥

●

जेती कथा निगम औ आगम बखानी हतीं,
कछू अभिधा सों वाच्य अर्थ की दिवैया है।
किती देत लक्षणा सों भाव के अनूठे सार,
व्यंजित सुअर्थ सार केतिक सजैया है॥
कहूँ रिसी मुनिजन भायौ ऐ प्रतीक अर्थ,
कथित यथार्थ में आदर्स पुरबैया हैं।
वेद सास्त्र रामायन गीता सों समृद्ध जो है,
हम तौ रे भैया! वाई देस के रहैवैया है॥



जामैं देववानी वेदवानी अति सारजुत,
पाय संसकार संसकृत नाम पैया है।
बाते जनमी हैं भूरि भाषा देस काल भेद,
पाली अपभ्रंस कछू प्राकृत कहैया है॥
दसमी सदी के ओर पास हिन्दी विकसी जो,
गुनन सों जन जन मन ॥ सुभैया हैं।
राष्ट्रभासा बनी जाकौ गौरव बढ़त जाय,
हम तौ रे भैया! वाई देस के रहैवैया है॥



1-50, गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

भारत गाथा

एक भर्‌यौ पूरौ बाग सोहत हमारौ देस,
विविध बिटप बेल सुमन सुहैया हैं।
धरम अनेक वेषभूषा खान पान भेद,
ऐसी हैं अनेकता सुरंग सरसैया हैं॥
दीसै जो विविधता में एकता या देस माँहि,
वाकी सरि कोऊ देस कहूँ न करैया हैं।
हिल मिल सोहत ज्यों हार में विविध फूल,
हम तौ रे भैया! वाई देस के रहैया हैं॥



चाहे कोऊ बोली बानी आँचर औ प्रान्त कोऊ,
जाति पाँति कुल कोऊ धरम धरैया हैं।
एक मेरौ देस वाकी आँखिन के तारे सब,
भेद भाव भूलि सब सगे भैन भैया हैं॥
जानें कैसी संस्कृति के प्रानन पीयूस पोस्यौ,
झेलि झेलि झौंका ये तौ आजहू जिवैया हैं।
पाय कें संजीवनी सुधा सों ऊर पूर जो हैं,
हम तौ रे भैया! वाई देस के रहैया हैं॥



महाकवि वाल्मीकि वेदव्यास कालिदास,
काव्य के पीयूष जिन प्रान सिंचवैया हैं।
रामायन गीता रघुवंस जैसे ग्रन्थ रत्न,
विस्व माँहि जाकी काव्य भूति के बढ़ैया हैं॥
ज्ञानी जाके विस्व गुरू, दानी उपमान नाहीं,
मानी स्वाभिमानी महा कबूँ नाँ झुकैया हैं।
जोहू दीठ आवै वामें अमित सुनाम धार्यौ,
हम तौ रे भैया! वाई देस के रहैवैया हैं॥



नाटक लिखे हैं भिन्न भासा माँहि कोटि कोटि,
कोऊ तौ सुकन्तला की सरि ना करैया हैं।
गीत काव्य माँहि मेघदूत सौ मधुर को है?
नीति ग्रन्थ पंचतंत्र अतुल बनैया हैं॥
कोमल औ कान्त गीत गोविन्द सौ कौन ग्रन्थ?
कादम्बरी गद्य उपमान बिनसैया हैं।
गनन गनेस हू न पावै गिरा मौन होत,
हम तौ रे भैया! वाई देस के रहैवैया हैं॥



..50, गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

उपमा में कालिदास कोइ उपमान नाँहीं,
अर्थ गरिमा में भारवि सुनाम पैया हैं।
पद के लालित्य में सुदंड़ी कवि सिरमौर,
माघ में त्रिगुन एक संग सरसैया हैं॥
भाव-रमनी के उर रस की पीयूष धार,
कला के विभूषन हू तन पै सुहैया हैं।
काव्य औ कला कौ मनि कंचन सुजोग जामैं,
हम तौ रे भैया! वाई देस के रहैवैया हैं॥



धनि धनि सूर जानें स्याम हू रिझाय लीने,
गऊघाट बैठ तानपूरा के बजैया हैं।
महाप्रभु वल्लभ के पग नख जोति पाय,
"सूर ह्वै घिघात काहे" लीला वरनैया हैं॥
आँधरौ ह्वै बाहर सों अन्तर उजास पायौ,
दीखें व्रज वीथिन में नंदजू के छैया हैं।
गोप ग्वाल लाल लाड़िली कौ लीला धाम न्यारौ,
हम तौ रे भैया! वाई देस के रहैवैया हैं॥



बाल लीला बरनि बहायौ वात्सल्य नद,
कौनों कौनों झाँक्यौ कछू सेस न बचैया है।
नर है कें जननी कौ हीयौ पायौ जान्यौ जात,
बाल हाव भाव उर अन्तर रिझैया हैं॥
नन्दलाल लाडिली के नेह कौ बखान कर्यौ,
बरनि सिंगार रसराज पद पैया हैं।
चरन कमल बन्दि सान्त रस सींच्यौ जामें,
हम तौ रे भैया! बाई देस के रहैया हैं॥



सूर बने सूरज सुकाव्य नभ तेज पूरि,
तुलसी सु सीतल सुधा के बरसैया हैं।
चंदा है कें चाँदनी की छटा छिटकाई जानें,
काव्य के पीयूष पीर ज्वाला के बुझैया हैं॥
देव के समाज बीच रावन से दैत्य दल,
धनुबान धारी राम धरनि बुलैया हैं।
धरम उधारिबे कूँ ईस अवतारी जामें,
हम तौ रे भैया! बाई देस के रहैया हैं॥



I-50, गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

गाथा

धनि धनि तुलसी के राम भू के भार हारो,
भगत वछल तीन लोक के गुसैंयाँ हैं।
काहे नाथ! रूसे मेरे देस सौं दयालु है कै,
केवट पिसाच नाव झिझरो डुवैया है॥
त्यारौ लीला धाम प्यारौ देस जो ललाम याकौ,
गौरव नसायौ आन वान हू नसैया हैं।
एक ही सहारौ जो है, देस राजा राम त्यारौ,
हम तौ रे भैया! बाई देस के रहैया है॥



जाही देस माँहि कवि भये हैं कवीर जैसे,
सत्य हेत सूधी सूधी सबकूँ सुनैया हैं।
जिनसे न ब्राह्मन न मौलवी तुरक कोऊ,
ढोंगी धरमान्ध धुनि धज्जियाँ उड़ैया हैं॥
हिन्दू इस्लाम राम खुदा की भुलायी भेद,
मन्दिर औ मस्जिद कौ साँच समझैया हैं।
जतन सों राखि धरी आतम चदरिया हू,
हम तौ रे भैया! बाई देस के रहैया है॥



सूफी संत जामें सुधा पेम की पिवाई छकि,
उर के पयोधि नेह ज्वार लहरैया हैं।
कुतुबन जायसी औ मझन मुमोद मानि,
प्रेम पीर बरनि सुकाव्य मरसैया हैं॥
धनि ये मुसलमान, हिन्दू प्रेम गाथा गहीं,
है के भाव मगन सुमन हरसैया है।
जामें भिन्न धरम के भेद भानि भाव भरे,
हम तौ रे भैया! वाई देस के रे हैवैया है॥



पद्यौ पदमावत पुनीत प्रेम पूरि पूरि,
अर्थ हू परोक्ष औ प्रत्यक्ष दरसैया है।
आतम रतनसैन, हीरामनि गुरु पाय,
नागमती-माया के कुबंधन तुरैया है॥
पद्मावती ब्रह्म राजै सिंहल सुरग माँहि,
प्रेम पास माँहि जीव ब्रह्म हू बँधैया है।
जाके घन तन माँहि राजत सुब्रह्म जोति,
हम तौ रे भैया! वाई देस के रे हैवैया है॥



-50. गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

राम कौ चरित तुलसी के ग्रन्थ रत्न माँहि,
माया की मरीचिका के वन्ध विनसैया है।
लोक परलोक की सुरीति नीति आनवान,
राम राजहू कौ रूप रुचिर रचैया है॥
लोक नायकत्व कौ नमूना यासे ऊँचौ नाँय,
जन जन हू कूँ करतव्य के सिखैया हैं।
निरगुन सगुन औ ज्ञान भक्ति मेल जामें,
हम तौ रे भैया! वाई देस के रहैया है॥

●

प्रेम की दीवानी मीरा, लोकलाज तोरि दीनी,
गिरधर नागर के नेह में रिझैया है।
जाके सिर मोर मुकुट वही पति मान्यौ है,
वाही हेत पगन में घुँघरू बँधैया है॥
अँसुआन जल सींच सींच नेह वेल वोई,
फैली प्रेम वेल सो आनंद फल दैया है।
विस होत सुधा सर्प ठाकुर कौ रूप जामै,
हम तौ रे भैया! वाई देस के रहैया है॥

●

जहाँ रसखान औ रहीम आन धर्म धारे,
हिया में समाये प्यारे किसन कन्हैया हैं।
जहाँ घन आनंद सुजान में सनेही हेर,
व्रज धूरि डारि डारि प्रानहू तजैया है॥
जहाँ द्विज सेख रंग रेजिन के राग रंगे,
हिय हरसाय कवि आलम कहैया है।
जहाँ भरे गागर में सागर बिहारी लाल,
हम तौ रे भैया! वाई देस के रे हैवैया हैं॥



जहाँ सतसैया के सुदोहरे अरथ पूरि,
नाविक के तीर बने ध्येय के सधैया हैं।
पद्माकर देव मतिराम द्विजदेव काव्य,
भाव औ कला के रस रसिक रिझैया हैं॥
नख सिख नायिका के भेद औ विभेद सारे,
वरनि बखाने सो तो छिति छेम छैया हैं।
जाको ऐ बेजोड़ सब जग में सौन्दर्य-बोध,
हम तौ रे भैया! वाई देस के रे हैवैया हैं॥



...50 गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

केसव जो काव्य-नभ दिपत नखत जोति,
रसिक समाज माँहि रस पुरबैया हैं।
काव्य कला कलित सुललित सुनाम धारी,
कविता की वनिता कूँ भूसन सजैया हैं॥
स्वेत कच हेर जो हिरानों हिय माँहि भारो,
चंद बदनीन बाबा कहे बिलखैया है।
रची जहाँ राम जू की चन्द्रिका सुछंद भूरि,
हम तो रे भैया! वाई देस के रहैया है॥



भूसन भन्यौ जो भारो ओज सों उतुंग तेज,
वीर रस मानों नर-रूप ही धरैया हैं।
फड़क उठत भुज दंड अरि चंड खंड,
देत जो प्रचंड दंड दुस्टन दलैया हैं॥
और राजा राव कोऊ मन में न ल्यायो जानें,
सरजा सिवाजी छत्रसाल के गवैया है।
कोऊ जाको बार बाँको करि हू न पायो कहूँ,
हम तो रे भैया! वाई देस के रहैया है॥



भोग औ विलास रस बूड़त सुदेस हेर,
संख के निनाद सोये देस के जगैया हैं।
हरीचन्द भारत के इन्दु बनि सुधा सींच,
जन जन मन देस प्रेम सों पगैया हैं॥
ध्येय लै सुधार को दुवेदी जुग जोति जगी,
हरिऔध मैथिलीसरन कविरैया हैं।
छायावादी पंत औ प्रसाद महादेवी सूर्य,
हम तो रे भैया! वाई देस के रहैया है॥



कथा के सम्राट मुंसी प्रेम चद देस माँहि,
जन जन बीच दुःख दरद दिखैया हैं।
विसम समाज माँहि हेरि कें समस्या जाल,
दूरि करिबे कूं जन ध्यान हू खिंचैया हैं॥
धन औ विलास कूं महत्व कोऊ दीयौ नाँहि,
ऊँचो ध्येय राखि तप-जीवन जिवैया हैं।
लेखनी को मान, जहाँ वैभव विलास ऊने,
हम तो रे भैया! वाई देस के रहैया है॥



50, गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

भारत

गाथा

सुर औ असुर मिल सागर मथित कीयौ,
रुचिर रतन पाय हिय हुलसैया हैं।
सुर सुरराज कछू लीये जो त्रिलोकीनाथ,
असुर कादम्य संभू विस के पचैया हैं॥
धरती के हेत धनवन्तरि सुपात्र कर,
सुधा कौऊ सार आयुर्वेद के रचैया है।
संयम सुपथ्य दीर्घ आयु आयुर्वेद जामें,
हम तौ रे भैया! वाई देस के रे हैवैया है॥



जहाँ के कौटिल्य करै अरि कूँ समूल नास,
कुस हो या महानंद नींव सों नसैया हैं।
प्रतिमासों पूरित सुराज काज मांज मांहि,
सिस्य चन्द्रगुप्त राजगद्दी के दिवैया हैं॥
तन वल हारयौ जाकी लेखनी अमर भई,
अर्थ हू में दच्छ अर्थसास्त्र के रचैया हैं।
केते गुनी देस देस के हू गुन गामें जाके,
हम तौ रे भैया! वाई देस के रे हैवैया है।



मैया-वाप-भगत सरवन जैसे सुत कहाँ?
तीरथ लै जात काँधे कावर धरैया हैं।
एक भयौ भरत दुस्यंत सुत सूर भारौ,
वालक हू सिंह-मुख दंत गिनवैया हैं॥
अर्जुन के लाल अभिमन्यु भेद चक्रव्यूह,
महारथी भीत सों अनीत अपनैया हैं।
धन्य मेरौ देस जाके सिसु हू सुनाम करें,
हम तौ रे भैया! वाई देस के रैहैया हैं॥



धनि रे प्रताप! त्यारे गावत प्रताप कवि,
छोरि राजपाट बन सघन बसैया हैं
अकबर आन वान पानिप पै पानी फेर,
मैया कौ सपूत कहै सीस न झुकैया है।
चेतक चढ़्यौ सो हल्दी घाटी की हजारी बीर,
मानी मानसींग मान माटी में मिलैया है।
खाई रोटी घास की, लजायौ नाँय माँ कौ दूध,
हम तौ रे भैया! वाई देस के रैहैया है॥



.50. गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

सरजा सिवाजी जीजाबाई के सपूत वीर !
धरम करम देस लाज के रखैया हैं।
हाँकी दै हिरानौं अवरंग भीति आनों, फोरी,
खोपरी खवास खाँ, साइस्त हू सिरैया हैं ॥
अरि नारी आनी जु सिपाही, ताहि हेर हेर,
जननी कौ रूप वा सुरूप में दिखैया हैं।
ऐसौ मेरौ देस जाके वीर यों चरित बारे,
हम तौ रे भैया ! वाई देस के रहैया हैं ॥



ऐसौ मेरौ देस जामें पान करौ गंगनीर,
तुलसी के दल आम कदली फलैया हैं।
मन्दिर में जाय मन मोहन प्रसाद भोग,
दोंना में पँजीरी पंचामृत हू पियैया हैं ॥
झालरिकी धुनि घंटा घोरन सुनाद सुनि,
संख को निनाद ईस आरती गवैया हैं।
कोटि सत सुरग सुधाम जापै बलि जाँय,
हम तौ रे भैया ! वाई देस के रहैया हैं ॥



याको छवि बरनि सकै को सेस सारदाऊ,
याके गुन गन गावें कौन सो गवैया हैं।
सोने की चिरैया, ज्ञान गरिमा को धाम न्यारो,
किये जो सुनाम न गनेस हू गनैया हैं॥
लीयौ जो जनम, याको अन्न जल तन माँहि,
लै कें नाम याको, प्रान याई पै तजैया हैं।
विश्व को विभूसन, बैकुण्ठ धाम ईसहू को,
हम तो रे भैया! याई देस के रे हैवैया हैं॥



विनती जो सुनि परै ब्रजचंद कान तेरे,
हे रे मन मोहना जो मेरी हू सुनैया है।
याती प्यारे चरन में दास राखि लीजो नाथ!
जनम मिलै तौ प्रान हिन्द के रिझैया हूँ॥
नरतन पाऊँ पसू कीट औ पतंगा कोऊ,
करम करे को जोहू जोंनि जीव जैया हैं।
जामें हिमगिरि गंग जमुन रिझावें जीव,
हम तो रे भैया! याई देस के रे हैवैया हैं॥



1-59, गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

मेरे देस माँहि नर नारी कौ निहारौ नेह,
जनम जनम प्रान संग के निभैया हैं।
आधौ अंग नर आधौ नारी अर्द्धांगिनी कौ,
छूटे हथलेवा नाहि प्रान हू तजैया हैं॥
ब्याह मेरे देस में तौ तन कौ ब्योपार नाँय,
प्रानन के फेरे काऊ भाँति न नसैया हैं।
सीता अनुसूया सती माण्डिली सी नारि जामैं,
हम तौ रे भैया! वाई देस के रहैया हैं॥

●

नारी रूप सक्ति मेरे देस की विभिन्न रूप,
धारि निज धरम सुध्येय की सधैया हैं।
रमा रूप धारि कैं रिझाये नर रूप हरि,
नर नारी जोग सौं जगत सिरजैया हैं॥
चंडिका के रूप बनी देवी सिंह वाहिनी हू,
भगत उधारि दुस्ट दलन दलैया हैं।
नारी पूजा होत जहाँ रमन करत देव,
हम तौ रे भैया! वाई देस के रहैया हैं॥

●

जीवन कुटुम्ब जैसें खिल्यौ ऐ उद्यान कोऊ,
नर और नारी ज्यों सुमन विकसैया हैं।
सिसु वृन्द विकच कलित कलिका से सोहें,
झोंकन समीर सों सुरभि सरसैया हैं॥
बाल वृद्ध नारी नर बँधे मरजादा डोरि,
सबकूँ सनेह सुचि आदर दिवैया हैं।
निज निज करम धरम कानि जाके माँहि,
हम तौ रे भैया! वाई देस के रे हैवैया हैं॥



घर घर धेनु धन भूमरे दरस होय,
ऊसा काल में ही नारी दधि की मथैया हैं।
गावत मधुर गीत रोत औ बगीची जाँय,
करत कलेऊ छाचि रावरी पिवैया हैं॥
भोजन में फल फूल दही दूध रोटी साग,
रूखी सूकी मिलै सोई खाय हुलसैया हैं।
लोक परलोक दोऊ सुधरत जाके माँहि,
हम तौ रे भैया! वाई देस के रे हैवैया हैं॥



-59, मौलवाड़र, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

जीवन की मस्ती मेरे देस की सी कहूँ नाँय,
हँसत खिलत जन काम के करैया हैं।
मेले, जात, ब्याहुले, वरात कहूँ ऐसे नाँय,
निज निज काम करि चवक के छनैयाँ हैं ॥
लरत अखाड़े माँहि, खेलत भड़ूडू कहूँ,
हूलगड़ा, गेंदटप्पे गिल्ली के खिलैया हैं।
उड़त पतंग, कन कौवा कहूँ काटे जात,
हम तो रे भैया ! वाई देस के रँहैवैया हैं ॥

●

जैसी मरजादा, ऊँचे आचरन मेरे देस,
वैसे काहू देस माँहि देखे न दिखैया हैं।
पर धन धूरि, परनारी मैया मानी जाय,
उमरि-बड़े कूँ ल्हौरे सीस के झुकैया हैं ॥
वैभव विलास ऊँचो पद धन सब तेऊ,
चरित के मान कूँ विसेस मनवैया हैं।
मैया-बाप गुरु अरु अतिथि को मान जामें,
हम तो रे भैया ! वाई देस के रहैया हैं ॥

●

कृषी कौ करम मान्यौ जात सबतेऊ ऊँचौ,
सौ मे अस्सी जन याई करम करैया हैं।
याते घाटि मध्यम करम बनिजाई कौ ऐ,
याऊ में बनिज ऊँचे नेम के निभैया है ॥
सबते अधम काम चाकरी कौ कह्यौ जात,
हेटे भागि वारे जन भीख मँगवैया हैं।
गाय बैल खेत औ खिरान सों विकास जाकौ,
हम तौ रे भैया ! वाई देस के रहैया हैं ॥



गामन में दीखै मेरे देस कौ असल रूप,
करि करि स्रम स्वेद वारि के बहैया हैं ॥
झूमरे के जात घर आनि दीयौ बाती करें,
सोने सी फसल हेर फूले न समैया है ॥
साँझ कूँ अलाव घेर, हँसें बोलें हुक्का फेर,
बाजरे की खीचरी सों ब्यारू में खवैया है।
ओटा पै मरद औ अटारी माँहि नारि रीझैं,
हम तौ रे भैया ! वाई देस के रहैया हैं ॥



50, गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

धन्न मन्न दूध कढ़ें, घेंमर विलोमें छाचि,
घी कौ लचकाऊ लै कें चाड़ी में धरैया है।
मोट बाँधि बाँधि नाज भरत कुठीला कोठे,
बुरजी भुसैरा घुप्पा भुस सों भरैया हैं॥
फद कूदें, नाल हू उठामें मूँछ ताव दै दै,
नर नारी रीझि रीझि रसिया गवैया है।
भुमिया पै खेलें मंत्र तंत्र गंड़ा गोठि जामें,
हम तौ रे भैया! वाई देस के रैहैवैया है॥

●

मेरे देस माँहि रीझि ईस अवतार लेत,
हरत कलेस भू के भार उतरैया हैं।
पाप घट फोरि, दीयौ धरम कौ जोरि, तोरि,
तम-तोम, पुन्य कौ पीयूस वरसैया हैं॥
सारे भू के देस मेरे देस सों उजास लेत,
गहत सुज्ञान विस्व गुरु मो कहैया हैं।
जापै बलि जात हैं सुरग अपवर्ग दोऊ,
हम तौ रे भैया! वाई देस के रैहैवैया हैं॥

●

रच्छन कूँ राम, जन रंजन-हमारे स्याम,
दसरथ नन्द ये, वो नन्द जू के छैया हैं।
ये तो पुरुषोत्तम कहाये मरजाद हेत,
वे तो नटनागर सनेह सों रिझैया हैं॥
एक नारी व्रत इन लीयो थापिबे कूँ कानि,
गोपिन के संग वे तो रास के रचैया हैं।
जामैं अवतार जन रच्छन औ रंजन कूँ,
हम तौ रे भैया! वाई देस के रहैया हैं॥



हे रे मोरे राम! मोरे देस पै कृपा की कोर,
करियो कृपा के निधि! जग के गुसैंया हैं।
फूलै फलै जग में सुनाम यसधाम होवै,
या सों सीख लेमें जगती के भैन भैया हैं॥
मय जन सब सों सनेह सनमान पावैं,
पर उपकार हेत प्रानन दिवैया हैं।
जगती के माथे को तिलक ज्यों सुहावै सदा,
हम तौ रे भैया! वाई देस के रहैया हैं॥



-50. सौगमसर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

गाथा

बंसी वारे किसन कन्हैया नंदलाल प्यारे !
आँसू भरि टेरें तोहि हिन्द के बसैया हैं।
आओ मनमोहना, बजाओ बाँसुरी हू फेरि,
जसुमति छैया लाल नंद के रिझैया हैं॥
कहा चूक परी, काहे रूठे हो हमारे स्याम,
देख देख वाट दिन राति बिलखैया हैं।
जामें गज तारे, द्रोपदी की लाज राखी नाथ !
हम तो रे भैया ! वाई देस के रहैया हैं॥



भाव भरे उर सों उतारू त्यारी आरती माँ !
प्रानन के तार त्यारे सुरसों बजैया है॥
साँस साँस माँहि त्यारी सुरभि समाई देवि !
त्यारे अन्न नीर तन मन में समैया हैं।
जीऊँ त्यारी अंक में मरे पै त्यारी छाँह पाऊँ,
हे री ! जन्मभूमि ! त्यारे नेह सों पगैया हैं।
जाकी रज माँहि बेर बेर जन्म लैन चाहो,
हम तो रे भैया ! वाई देस के रहैया हैं।



मोरे उर माँहि आन चाह कोऊ बची नाँय,
सांची चाह रही जासों प्रान हुलसैया है।
पावौं हौ जनम बेरि बेरि जमुना के कूल,
सघन निकुंज औ कदम्ब तरु छैया है॥
झाँमरे करीर अरु सोरो घन छाँव मंजु,
बाँसुरी बजावते सुधेनु चरवैया हैं।
जाके उर माँझ ब्रज मंडल सुहात नीको,
हम तो रे भैया ! वाई देस के रहैवैया हैं॥

●

तीन लोक माँहू न्यारी मथुरा के और पास,
विन्दावन, गोकुल अनन्त छवि छैया हैं।
नन्दगाम, दाऊजी, रमणरेती हेर हेर,
साँवरे कन्हाई की सुरति सरसैया है॥
बरसाने जाय सुधि लाड़िली की उर माँहि,
ग्वाल बाल संग तन सुधि बिसरैया हैं।
जामें गिरिराज सोहा पौंडरी, को जै जै कार,
हम तो रे भैया ! वाई देस के रहैवैया है॥

●

पता : सी-50, गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

दऊँ परिकम्मा तौ अनन्त बेर रीझ रीझ,
जतीपुरा राधाकुंड प्रान पुलकैया है।
लोटि लोटि जाऊँ दिव्यता सों सनी रज माँहि,
सुर सुरपति धाम पग ठुकरैया है॥
हे रे! जगदीस त्यारे अनंत निहोरे खाँउ,
जनम जनम प्रान व्रज के बसैया हैं।
गोरधन चहुँ ओर, मानसीगंगा को नीर,
हम तौ रे भैया! वाई देस के रहैया है॥



धनि धनि जनम की भूमि तो पै बलि जाऊँ,
साँस साँस छिन छिन लेत यों बलैया है।
बनूँ चाहे पसू नर पंछी औ पतंगा कीट,
चाह मोरे प्रान सदाँ हिन्द के बसैया है॥
खाऊँ फल फूल न्हाऊँ गंग जमुना के नीर,
अधर मदाँई दधि दूध के पिवैया है।
बद्रीनाथ कासी सेतुबंद जैसे धाम जामें,
हम तौ रे भैया! वाई देस के रहैया है॥



मोरे उर माँहि आन चाह कोऊ बची नाँय,
साँची चाह रही जासों प्रान हुलसैया हैं।
पावौं हौ जनम बेरि बेरि जमुना के कूल,
सघन निकुंज औ कदम्ब तरु छैया है॥
झाँमरे करीर अरु सीरी घन छाँव मंजु,
बाँसुरी बजामते सुधेनु चरवैया हैं।
जाके उर माँझ ब्रज मडल सुहात नीको,
हम तौ रे भैया! वाई देस के रैहैया हे॥



तीन लोक सौंह न्यारी मथुरा के ओर पास,
विन्दावन, गोकुल अनन्त छवि छैया हैं।
नन्दगाम, दाऊजी, रमणरेती हेर हेर,
साँवरे कन्हाई की सुरति सरसैया है॥
बरसाने जाय सुधि लाड़िली की उर माँहि,
ग्वाल बाल संग तन सुधि बिसरैया हैं।
जामें गिरिराज लौठा पौछरी, को जै जै कार,
हम तौ रे भैया! वाई देस के रैहैया हैं॥



पता : सी-50, गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

दऊँ परिकम्मा तौ अनन्त बेर रीझ रीझ,
जनीपुरा राधाकुंड प्रान पुलकैया हैं।
लोटि लोटि जाऊँ दिव्यता सों सनी रज माँहि,
सुर सुरपति धाम पग ठुकरैया है॥
हे रे! जगदीस प्यारे अनंत निहोरे खाँउ,
जनम जनम प्रान ब्रज के बसैया हैं।
गोरधन चहुँ ओर, मानसीगंगा कौ नीर,
हम तौ रे भैया! वाई देस के रहैया है॥



धनि धनि जनम की भूमि तो पै बलि जाऊँ,
साँस साँस छिन छिन लेत यों बलैया है।
बनूँ चाहे पसू नर पंछी औ पतंगा कीट,
चाह मोरे प्रान सदाँ हिन्द के बसैया हैं॥
खाऊँ फल फूल न्हाऊँ गंग जमुना के नीर,
अधर सदाँई दधि दूध के पिवैया है।
बद्रीनाथ कासी सेतुबंद जैसे धाम जामें,
हम तौ रे भैया! वाई देस के रहैया है॥



मुनि मोरी मैया ! हाथ गंगजल धारि कहौ,
मोरे तन मन त्यारे मान के बढ़ैया है।
त्यारे जस हेत बलि देउँ तन-मन-धन,
सीस कटि जाय परि कीर्ति ना नसैया हैं ।।
जगती में गूँजे नाम हिन्द कौ अनिन्द्य मजु,
जगत गुरू कौ पद पाय हुलसैया है।
सोने की चिरैया दधि दूध की सरित वहैं,
हम तौ रे भैया ! वाई देस के रहैया है ।।

●

धनि जीवन ! धनि लेखनी !!, जनम भूमि जस गाय।
सजल नैन पुलकित वदन, मनुआँ अति हरसाय ।।
× × ×
हिमगिरि मंजुल मुकुट सिर, गग जमुन सुचि माल।
चरन धूरि सिर धारि कें, अम्बुधि भयौ निहाल ।।
× × ×
पुन्यमयी ममतामयी, हे मैया सिरमौर।
कवि के मनुँआ कूँ रुचै, और न कोऊ ठौर ।।
× × ×
त्यारी रज में जनम लै, याही रज में अंत।
जनम मरन कौ चक्र ई, चलतो रहे अनत ।।

●

:
..-50, गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

भारत पतन

भारत की महिमा लिखी, धन्य लेखनी तोय।
पतन लिखित अति पीर सों, आँखर आँसू रोय ॥

× × ×

जाकी पावन भूमि पै, ईस लये औतार।
सो अब अति कलुसित भई, दनुज भये साकार ॥

× × ×

सोंने की चिरिया बनी, दूध दही सर पूर।
वाकों अब जाचक कहें, और देस मद चूर ॥

× × ×

हे मैया ! पावन मही ! तीन लोक सिरमौर !
उच्च सिखर सों पतित ह्वै तिलफत परी कुठौर !!

× × ×

कवि के हियरा अति हूक उठै, अँखियाँ भरि है असुआँ ढरि है।
सिरमौर हतो सब देसन को, कभूँ जानी न बात इतो गिरि है ॥
जग याके कहे सुर जावत हे, अब गर्त अधोगति के परि है।
कब तारू कहो ब्रजराज हमार बुरे दिन के बदरा टरि हैं ?

रामकृष्ण

ी-50, गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

मनुआँ की पीर

भारत-महिमा लिखिकें लेखनी धन्य भई ! परि वाकूँ भारत-पतन लिखिवे कूँ हू विवस होंनों पर्‌यौ। देखिकें अनदेखी कैसें करी जाय ? जो देस अतीत काल के माँहि सुरलोक सों हू बढ़िकें पुन्य धाम हौ, वू जा समै माँहि पतन के औंड़े गर्त्त माँहि पर्‌यौ तिलफि रह्यौयै। देस के जीवन के सबई छेत्रन माँहि भारौ पतन भयौ ऐ। कितहूँ काऊ तरियाँ कौ धरम-करम अरमान-मर्यादा कौ नैंकऊ भाव-झुकाव नाँय दीखै। जितै देखौ बितैई मर्यादा हीनता, अवमूल्यन, गिरावट, भ्रस्टाचार, असत्य अरु धोंगेबाजी कौ बाजार गरम है। नैंक निगाह चूकी कै माल मारन कौ। कुहूँ काऊने काऊ कौ नैंकऊ बिसवास कर्‌यौ, कै वाकौ वेड़ा गरक भयौ। काऊ छेत्र माँहि ना तौ कर्त्तव्य की भावना रही, नाँ काऊ कौ डर या लिहाज रह्यौ-अपितु निर्लज्जता मानों सुभाव बनि गई ऐ। घूँस, सिफारिस, बेईमानी, पच्छपात, भाई भतीजा वाद, लाल फीता साही, मिलावट, झांसेबाजी, ये तौ अब कोऊ अचंभे की बातई नाँय। इनसे कोऊ नैंकऊ नाँय चूकै और ना चौंकै ! इनकूँ तौ हरेक भारत वासी मानसिक रूप सों तैयार दीखै और कोऊ आपत्ति नाँय करै। देस वासीन नें अपनी मौलिकता तौ खोय दई ऐ अब तौ वे विदेसी नकल करिवे मेंई सान समझें। खानपान, ओढ़नों-पैरनों सब बिगरि गयौ ऐ। घरन में पूजा पाठ अरु हरि नाम के सुमरन कौ कोऊ वातावरन तौ कहूँ दीखै नाँय, चल चित्रन के भौंड़े कलाहीन, भावहीन अरु मूल्यहीन गानें गवते सुने जाँय। वगीचीन में न्हाय धोयकें पहलवान जोर करते दीखें, तौ पहल् ... ज,

चौपाल अरु थाईन पै जोट जुरें। ना कहूँ नारीन के कोकिल कंठन सों गीत-गारो सुनाई परें, और ना कहूं कथा-कीरतन ही होते दीखें। सब छेत्रन माँहि देस कूँ काठ सौ मारि गयौय। ल्हौरे-ल्हौरे छोरा छापरे वीड़ सिगरेट पीमते दीखें। गली. बजार, नुक्कड़न पै सीटी वजामते अरु भेने वेटीन मौऊ गलत इसारे करते करते या कछू भौंड़ो बात कहते या फिसर फिसर वदतमीजी सों हँसते खिस्यानते से दीखें। विन की तन्दुरुस्तीयै देखिकें तौ तरस आवै। काहे कूँ म्हैतारी ने कूँखि बिगारीयै इन्ने जायवे कूँ? का आसा है सक इनसों देस के ताँई?

सिच्छन सस्थानन माँहि देस के भावी नागरिक बन्यौ करें 'परि आजु की दसा देखि के तौ माथौ भन्नायवे लगि जाय। वनामे जाय रहे हैं कै विगारे जाय रहे है? स्याति बिगारि ज्यादा रहे हैं वनि वे सों तौ। फेरि कहा वनेंगौ या देस कौ आगे चलि कें? भ्रस्ट राजनेता, भ्रस्ट अधिकारी, भ्रस्ट व्यौपारो, पतित सिच्छक, भ्रमित जनता अरु विगरती भावी संतति''''''प्रभु ही पार लगाय सके या देस की लरखराती नैया कूँ!

भारत-महिमा मेरे मनुआं को हुलास है अरु भारत-पतन मेरे उर को रुदन है। सबन सों इतेकई कहनों है, कछू है सकै तौ करो। बूड़ती नैया कूँ बचाओ।

रामकृष्ण

1-50, गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

दधि दूध के निर्झर भँते जहाँ,
म्हाँई मद्य के प्याले पै प्याले पियें।
जहाँ नारी सती नर नेम व्रती,
म्हाँई वैस्या विदूसक भाँड़ जियें ।।
जहाँ वात के कारन प्रान दये,
म्हाँई वात झुँठात सिहात हियें।
हे रे देस मोरे तोय काह भयौ ?
ऐसे हालों में सज्जन कैसे जियें ?



जहाँ मन्दिर झालर संख बजे,
म्हाँई नारि पराई के संग नचें।
जहाँ मंत्र सुकाव्य रिसीन रचे,
म्हाँई काम विलोभन वानी रचें ।।
जहाँ दूध दही घृत भोग भखे,
म्हाँई आमिस कुक्कुट मच्छ पचें।
हे रे देस मोरे तोय काह भयौ,
ऐसे हालों में सज्जन कैसे बचें ?

जहाँ होम हुते म्हाँई चड़् फुकें,
जहाँ दान दये म्हाई जेब कटें।
जहाँ गैया तो मैया समान पुजी,
वा भूमि पै निसि दिन धेनु कटे॥
जन पालक जाके भूपाल हुते,
वाके नेता सुनीति तें दूरि हटें।
हे रे देस मोरे तोय काह भयो,
ऐसे हालों में सज्जन कैसे डटे?



जाकी भूमि पै कान्हा ने रास रचे,
वाई भूमि पै राकस त्रास करें।
जहाँ राम नें रामन मारि दये,
म्हाई रामन निर्भय वास करे॥
जहाँ ल्हौरे बड़ेन के आगे झुके,
म्हाँई आजु निलज्ज ह्वै हास करें।
हे रे देस मोरे तोय काह भयो,
ऐसे हालों में सज्जन कैसे करें?



सी-50, गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

जहाँ कृस्न सुदामा से मीत भये,
म्हांई स्वारथ हेत मिताई तजें।
जहाँ औध को राज खड़ाऊँ कर्यो,
म्हांई सत्ता की दौड़ में अंधे भजें॥
जाको भूमि पै पद्मिन नारि सजीं,
बाई भूमि पै नारि छिनारि सजे।
हे रे देस मोरे तोय काह भयो,
ऐसे हालों में सज्जन कैसें रजें?



काऊ सांच के देखन की रुचि ना,
व्यभिचार के वारि के बीच बहें।
सब जीवित मांखी कूँ लील रहे,
जिन देखो तेई दृग मींच रहें॥
सबरे जन कीच उछारत हैं,
इक दूजे पै दांतन भींच रहें।
हे रे देस मोरे तोय काह भयो,
ऐसे हालों को सज्जन कैसे सहे?



जहाँ मान गुनी कूँ सदाँई मिल्यौ,
म्हाँई दुर्जन देस पै छाय रहे।
जहाँ आन की लीक न छोरी कहूँ,
म्हाँई आजु बनै कूँ मिटाय रहे ॥
जाकी भूमि पै तिगुँन बाय वही,
बाई भूमिपै अंधड़ आय रहे।
हे रें देस मोरे तोय काह भयौ ?
तोरे रच्छक ही तोय खाय रहे ॥

●

जहाँ राम नें रच्छन काज करे,
जहाँ कान्ह नें रंजन रास रचे।
जहाँ सीता नें मूक ह्वै त्याग करे,
जहाँ राधा के नेह सों प्रान तचे ॥
जहाँ औध को राज खड़ाऊँ कर्‌यो,
दुरन्याव सों राजहू नाँय जचे।
हे रे देस मोरे तोय काह भयौ,
अब कोइ ना ऐसे कहूँ ही बचे ॥

●

50, गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

अब विप्रन की कछू बात कहूँ,
उर बीच में हूक सी जागत है।
जिन क्रिया तपस्या सों मंत्र रचे,
तिनकौ मन भोग में लागत है॥
अब अर्थ औ सत्ता कूँ दौरि रहे,
जाहे देखौ वही कहूँ भागत है।
जाकौ ब्रह्म मुद्रा सों पग्यौ मन हौ,
क्यों माया सों तन मन पागत है?

●

जिनके पग राज भुआल परे,
वे ई सासक के पग चूमि रहे।
जिन विस्नु के वक्ष पै लात दई,
वे ई विस्नु-प्रिया-मद भूमि रहे॥
जिन ज्ञान प्रकास सों विस्व भर्यौ,
वे विदेस में सिच्छा कूँ घूमि रहे।
जब विप्रन कौ ई विहाल भयौ,
अब कैसें मुरच्छित भूमि रहे॥

●

अब चेतौ समाज के सीस तुम्हीं,
तुम सों ही तो विस्व नें ज्ञान लयो ॥
तुम और जगाय कें सोय रहे,
कहाँ गौरव ज्ञान को भान गयो ?
अब भूमि ई जात रसातल कूँ,
चहुँ ओर सों पाप को साप छ्यो ।
हे भूमि के रच्छक विप्र-समाज !
अजहूँ नहीं जागत काह भयो ?



अब बात करौं कछु छत्रिन सों,
भुज बेई समाज के रच्छन कों ।
कित वीरता साहस छाँड़ि दये,
व्रत लिन्हो समाज के भच्छन कों ॥
तुम पीछे दुरे, नहीं आगे बढ़े,
काहे सासन सौंप्यो अलच्छन कों ?
व्यभिचार के वारि में देस गिर्‌यो,
औ घिर्‌यो दल-हिंसक मच्छन कों ॥



-50, गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

कारन

माया

तुम जौ नहीं देस की रच्छा होय,
नहीं बिछुआ सब हाथन पूरे।
कुमारि के भेस में देस है खाब
बिनास की चाह करौ नित पूरी ॥
तुम्हें जौ होय बिनास जौ होय,
रहै नहीं भोग की चाह अधूरी।
तुम जो मन पाहन ही जनती,
जननी क्यों नाहक देह बिछूरी ॥



अब वैस्यन को कछु हाल लखौ,
ये तौ पेट समाज के [illegible] ।
जिन मन्दिर दान औ पुण्य कहे,
तिन पाप कमाई के [illegible] ॥
मुख झूठ मिलावट [illegible],
कम तोलि में [illegible] ।
कोऊ साँच कहै तो बुरो [illegible],
[illegible]



कृसि कर्म जो दौस्यन कूँ फलतौ,
अब छाँड़ि दयौ, पसु पालन हू।
वनिजाई की नीति अनीति भई,
धन लूटि रहे दुरचालन हू॥
द्विज धेनु कूँ दमड़ी हू ना खरचें,
नाँहि ध्यान सुवालन लालन हू।
अब छाँडि के होंम सुधर्म कथा,
रुचि कर्म कटू कलि कालन हू॥



चरन समाज माँहि पगन कौ काम कर्यौ,
जानें सदां ढोयौ है समाज तन-भार कौ।
वाकी ओर नैक हू जो डीठ डारि देख लेहु,
सेवाभाव छाँड़ि रूप धार्यौ अहंकार कौ॥
काहू की न कानि, मान काहू कौ न कर्यौ जात,
आचरनहीन रूप धर्यौ व्यभिचार कौ।
हाय मेरे देस त्यारे हाल पै तरस आवै,
आजु तू बन्यौ ऐ केन्द्र भारी अनाचार कौ॥



-50, गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

सील साँच आचरन धरम करम सब,
बूड़ि गये ये तौ सत्ता वित्त के संघर्ष में।
नंगे ह्वै कें नाच सब करि रहे चहुँ ओर,
बूड़े जन देस-द्रोह दानवी अमर्ष में॥
प्रजातंत्र आयौ याकौ स्वागत करत कवि,
हेर कें तिरंगा हम झूमें भारी हर्ष में।
किन्तु जो अन्धेर आपापूती स्वार्थ परता ऐ,
वासों गिर्‌यौ जात देस गर्त्त दुर्धर्ष में॥



नेता सब्द भयौ पर्यायवाची गर्दभ कौ,
होतौ जो प्रयोग बापू नेहरू औ सुभाष को।
खुले आम कुर्सी की लराई चहूँ ओर ठनी,
जीतते चुनाब घर भरिबे की आस को॥
देस जाय भाड़ माँहि, जन गिरें कुआ माँहि,
नाँहि कोऊ ध्यान दूरि या कि आस पास को।
ई तौ भई खैर जो चौपाये न बनाये ईस,
ये तौ चरि जाते सब सूखी हरी घास को॥



भारत

पतन

देखौ नेंक दीठ कूँ उठाओ निज देस माँहि,
हते जो सुधाम वे कुधाम अब पाप के।
जहाँ कभूँ मुनि जन जाप कर्यौ राम नाम,
वे ई बने धाम काम कोहन प्रलाप के॥
पायौ वरदान जिन तीरथ सुईसन सों,
म्हाँई बकें वचन अहरनिसि साप के।
बाप अब रह्यौ नाँय बेटा कौ हितैसी कहूँ,
बेटा रहे नाँय ह्याँ हितैसी निज बाप के॥



मन्दिरन माँहि अब मद्यप निवास करें,
देवन के धाम ह्याँ सने है व्यभिचार सों।
पंड़ा औ पुजारी औ महन्त मठाधीस सब,
बुगला भगत भरें पेट अनाचार सों॥
धन के गुलाम, नाँय स्वाभिमान काऊ माँहि,
दूरि भये जात भक्ति भाव के विचार सों।
दान दच्छिना कौ रूप लूट पाट भयौ आजु,
कोऊ न लखात सूधौ साँचौ सदाचार सों॥



-50, गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

तीर्थ धाम कभू रिसीगन तपे तप भारे,
वेद बानी गूंजी मंत्र रचे ब्रह्मभाव सों।
आतम उबारि परमातम सों एक भये,
मर्त्यलोक छाँड़ि ब्रह्म लोक गये चाव सों ॥
ग्यानी लह्यौ ग्यान औ भगत भक्ति सुधापान,
सबके भले कू कर्म कर्यौ सद्भाव सों।
कोऊ जीव रोवयौ गयौ सुरग के द्वार कभू,
वाऊ कू सुरग लीन्हों निज के प्रभाव सों ॥



याई देस माँहि आजु तीरथ अकारथ ह्वै,
ढोंग औ ढकोसलों के बने यों कुधाम है,
जात जो श्रद्धालु तिन्हें लूटत ह्यां खुले आम,
नाम लै धरम कौ उधेरें तन चाम है ॥
पंडागीरी भयौ व्यवसाय भीख माँगन कौ,
चोरी सीना जोरी हिंसा हत्या खुले आम है।
अब जाय कोऊ कछू लाभ न उठात म्हाँ पै,
उल्टे भये काम वस बचे कोरे [illegible] ॥





भारत

पतन

मंदिर में जाँय तौऊ सबै कूँ गमामें जन,
भीर भँगतान की करन फोरि देत है।
लाओ माई, देओ बाबा, हाय-हाय काँय-काँय,
नेक आगे बढ़े तो पन्हैयाँ चोरि लेत है।।
भीतर जो पौंचे तौ घनेरे जेब कट्टू मिलें,
तबें ये पराई नारि धक्का मुक्का देत हैं।
ध्यान धर्म मोक्ष को करौगे कैसे ऐसी ठौर,
ह्याँ तौ अर्थ काम सों लगाये सब हेत है।।



पत्थर की प्रतिमा सों देव अब दूरि गये,
काहे कूँ झुकात माथ ढोंगीन के ढेर में।
कोऊ नाँय ग्यानी और भगत अब कोऊ नाँय,
सब जन फँसे है निन्यानमें के फेर में।।
जाकौ लगै दाव दूई आँटा गोड़ी डारि देत,
देत है पछारि, चूकै नाँय निज बेर में।
बुगला भगत लील जाँय मीन मच्छन कूँ,
छोरें नाँय काऊ कूँ ये देर या अबेर में।।



50, गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

देखौ गऊसालान में चन्दा की रकम जोरि,
धेनु की ठठरीन पै भारी ठाट वाट हैं।
आप तौ उड़ामें माल, धेनु डकराँय भूखी,
ओढ़ते जो टाट तिन रेसम के पाट हैं॥
चन्दा है कलपतरु कलजुग माँहि मीत!
कलिदेव के तौ वरदान ये विराट हैं।
कैसे बचें मीन कलजुग के या नीर माँहि,
ह्यां तौ भारे मच्छीमार घिरे घाट घाट है॥



विद्या जाकौ काम अँधियारे में उजारौ होय,
वाके करतब तौ भारत में देख लेऔ।
और सब काम, पै पढ़ाई कौ तौ नाम नाँय,
पहुँचौ विद्याधाम आखिन सों देख लेऔ॥
नाँ तौ चट्टा पढ़े, ना पढ़ामें तिन्हें गुरु जन,
मुफति की आँच बरै, अगा खूब सेक लेऔ।
कहा भयौ हाल है रे देस! तू हौ विस्व गुरु,
आज हू नेता, भैया! ध्यान यापै नेंक देऔ॥



देखौ काऊ विद्यालै में कैसौ है घिनोंनों रूप,
चट्टा सिगरेट पीमें गुरून के सामनें।
छेड़खानी करें भेन बेटी औ पराई नारि,
कच्ची है उमरि पै सतायें कूर काम नें॥
नारेबाजी, हूल हुरदंग हड़ताल करे,
मति यों बिगारी चलचित्र अरु जामनें।
कहा करें गुरुजन, पुलिस प्रसासक हू,
बाप हू डरात निज सुतन के सामनें॥



कैसें सँवरेगौ देस, पीढ़ी ई निकम्मी भई,
नाँय कछू आस या कपूत की जमाति तें।
कह्यौ मानें नाँय अरु आप कछू जानें नाँय,
नकल विदेसी, दिन कहें कारी राति तें॥
नाँहि मरजाद स्वाभिमान ध्यान हूति नाँय,
लरत बहाने लै लै धरम औ जाति कें।
नाँ तौ ये निभामें नेम राज औ समाज केई,
नाँ ये माने बात कछू पंचन की पाँति कें॥



50, गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

जाय औसधालेंन को रूप नेंक देख लेयौ,
इनकौ तौ ध्येय नव जीवन कौ दान है।
रोगी हेत होत हैं चिकित्सक तौ ईस रूप,
सबन के उर माँहि भारौ नेह मान है॥
आजु कहा भयौ ये तौ देवन सों दानव ह्वै,
जन जन उर माँहि मान है न आन है।
धन मीये बिना उर भाव न दया के रंच,
दयाहीन धन लेबौ रुधिर कौ पान है॥



आमैं जेती औसधि सो बेच खामें हाट माँहि,
पट्टी, पेच, दवा-दारू सब बिक जात हैं।
एपमरे की प्लेट अरु सुई रुई बोतल हू,
ब्लैक सों बिकत तऊ कभू ना अघात हैं॥
ऐसी ऐसी बात जिन कहत हू लाज आवै,
रोटी, दारि, दूध हू के सौदा करे जात हैं।
इनकूँ ना लाज आवै, कैसे निरलज्ज भये,
हम तौ रे भैया ! सोचि सोचि मरे जात हैं॥



नेंक दीठ डारौ वा विभाग पै जो रच्छा-हेत,
आरक्षी कहात वाके कैसे बुरे हाल है।
ध्येय निरधार्यौ जन जन भयहीन होंय,
किन्तु करतूतन सों दीखें मानों काल है ॥
दीन की पुकार पहुँचे न काऊ ावधि कान,
उल्टे फँसि जाँय ऐसे फंदा वारे जाल है।
दुखी तौ घिघायौ करें, दोसी मुक्त मस्त फिरें,
कोऊ मरें, कोऊ जियें, नेंक ना मलाल है ॥

●

घूँस बिना भीतर न जाने देय चौकीदार,
चाय बीड़ी, भेंट भाई, पौरी के से नेग है।
जाय फँसे भीतर तौ निकरि सकौ ना भार,
फेरि चाय पानी कौ हुकम देत बेग है ॥
रपट लिखाऔ, डाँट डपट सुनत जाओ,
मूल दुःख भूलि मन जागत उद्वेग है।
इतै कुआ, वितै खाई, जाय तौ कितै कूँ जाय,
खाली जेब नोट लगे यारन के नेग है ॥

●

-50, गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

कहूँ कोऊ महिला दुख्यारी मजबूर है कें,
एक बेर फँसे इन फन्दीन के जाल में।
भाड़ में गयौ याने पहिलें दुःख पायौ होय,
अब कहाँ बचै फँसी काल के से गाल में ॥
सील औ सतीत्व की चिता सी जरै खुले आम,
हाय हाय गाय डकराय बदहाल में।
हे रे मोरे देस ! तोरे रच्छक या भच्छक ये,
बूड़े दिन राति क्रूर कामी ये कुचाल में ॥



काम अभिभासक कौ न्याव की सहाय करैं,
देमें न्यायाधीस कूँ सहारौ निज ज्ञान कौ।
आजु देखौ हाल विपरीत आचरन भये,
लेमें झूँठे केस छाँड़ि निज आन बान कौ ॥
एकई रहयौ ध्येय, लूटैं धन काऊ भाव,
दंड फंद छल छद्य भरें झूँठी मान कौ।
स्वारथ के हेत चाटुकारिता सौं घूरि चाटैं,
हाकिम पटामें छोरि निज स्वाभिमान कौ ॥



ज्ञान है कानून कौ न रंचमात्र, कोरी ऐंठ,
लई हैं किताब हू दिखायवे के काम ते।
नाँय चलै काम जब केसन की आय से तो,
से में रिसवत निल हाकिम के नाम ते॥
धरम करम धरि दीनौं ऊँची ताकन पै,
नाँहि डर मानें ये रहीम ते न राम ते।
ये तौ माने बात जब खोपरी पै जड़ै कोऊ,
फटी सी पन्हैयाँ कूँ उतारि निज पाम ते॥



न्यायाधीस न्याय के औतार माने गये सदा,
करी फरियाद जो वाकौ दुःख दूरि कीयौ।
आजु कहा भयौ न्याय.मूर्ति हू अन्याय करें,
कागजी न्याय कछू पन्नान पै पूरि दीयौ॥
जाके संग आये हैं गवाह कलाकंद खाय,
जिन्नें काळ तरियाँ धन लाभ भूरि दीयौ।
जीते वेई केस डंका चोट मारि मारि सब,
मूँछन पै ताव दै भारौ मगरूर कीयौ॥



-50, गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

न्यायालय को मान मोरे मन में ऊर पूर.
अवमानना को भाव हू तो भारी पाप है।
पर देख देख हाल कहे विन रहूँ कैसे,
रूप जो दिखत प्रजातंत्र माँहि साप है॥
आमें फरियादी दूरि क्षेत्रन सों कष्ट पाय,
पैसा खर्च होय, छूटे कारज कलाप हैं।
फैसलो न होय, तिथि बढ़ै बेर बेर जब,
आखिर दुःखी ह्वै घूँस दे अपने आप हैं॥



चेत मोरे देस ! तू तो न्याव को औतार हतो,
कहा भयो तोरे माँहि आजु पापाचार है ?
चाहे चपरासी, पेसगार अरु हाकिम हों,
जहाँ देखो म्हाँई व्याप्त भारी अनाचार है॥
काहू को न काम होय, न्याव की घुटत नारि,
राति दिना गरम ह्याँ घूँस को वाजार है।
मुट्ठी जो गरम करै, बाको झूँठ साँच होय,
साँचो जन धनहीन डोलत लाचार है॥



आँधी पीसैं कुत्ता खाय, साँची भई बात आजु,
आँधे बाटैं रेवड़ी सो अपनेन देत हैं।
लाल फीतासाही, आपाधापी, जातिवाद, वर्ग,
जितै देखौ वितै स्वार्थ साधना सों हेत हैं ॥
काऊ कौ बिसवास कोऊ करैं अनीती होय,
मानव सों आजु सब बने जिन्द प्रेत हैं।
जाय रह्यौ देस जानें कौन से रसातल कूँ,
देस बासी सोय रहे, जानें कब चेत हैं ॥



खाइबे कूँ, पीबे कूँ हू सुद्ध कछू रह्यौ नाँय,
जामें देखौ बामें कछू मेल मिलावट है।
नाजन में सत्व नाँय, तत्व नाँय दूध हू में,
जिस्म में न जोस, नाँ मगज तरावट है ॥
ना तौ पैली ब्यारि चलें, मौसम न रहे वैसे,
निसर्ग के न रंग है, मेह न मावट है।
ना तौ नर रिझवार, नारि ना रिझामनी हैं,
सूकरी सी भौंटिया, मोट्यार हू खापट है ॥



…50, मोतीनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

घ्यौ में चरवी कौ मेल, तेल में कटेरी मिली,
मिरच में गेरु, धनिये में मिली लीद है।
होरा मिरच में बीज मिले अंड़कांकरी के,
महद में सौंफ गुड़, होग में मोंमीद है॥
बीज भये संकर, औ फल फूल फासले से,
चूकै ना व्योपारी, चाहे सांमनी या ईद है।
सुद्ध औ असुद्ध की रुपी जो रारि देस मांहि,
वाकी वलिवेदी पै ईमान भौ सहीद है॥



देस में कुटुम्ब रुप विकृत भयौ है अब,
छोरे जन बड़ेन कूँ मान नांय देत हैं।
होंत ही बियाह बहू लै कें पूत न्यारे होंय,
बूढ़े बड़े जनन कूँ हाल धता देत हैं॥
बढ़त बिलास अति फैसन के दास होत,
धूम्रपान, व्यसन, चलचित्र मांहि हेत हैं।
भूले करतव्य भाव, बूड़े हैं आदर्स सब,
पुरखन हू के काम नांस किये देत हैं॥

पैलें होते व्याह, मारी धूम धाम रंगराज,
सब में उछाह को जलधि लहरात हो।
महीना पैले सों तैयारी होती चाव भरी,
आते प्यारे पाहुने सो घर भरि जात हो।।
भैन बेटी आतीं लैके वाहिने में माठें गोल,
पूरो गाम झूमतौ खुसी सों गीत गात हो।
कैसी हती संस्कृति की रंगत उछाह भरी,
हर्स को अपार पारावार ना समात हो।।



अब भये व्याह आने दिन के तमासे भोंड़े,
चारि वजें जाओ कन्या लै भाड़े के भौन में।
भाड़े के ई पंडित, औ म्हाँई उपहार मिलें,
भोजन कौ ठेका देऔ बैठ जाऔ लौन में।।
गीत गारी नेग जोग कछू कोऊ करै नाँय,
ध्यान दीऔ जात नाँय संस्कार सौन में।
हरद ना फिटकरी, औ गई वहू आ परी,
भाड़े की लै वाहन किराये के ही भौन में।।



1-50, गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

गाथा

भोजन जो जींमते सो बैठतीं ही पांति पूरी,
पातरि दुदोंना औ सकोरी में जिमांमते।
कुल्ली में पानी कोरी करसिया में छेद करि,
डारि कें गुकेचड़ा हू ओक सों पियांमते॥
भोजन में खीर-पुआ ऊपर मों बूरी घृत,
करिकें निहोरे मनुहार सों खवांमते।
चखक माल खाय गुलकन्द भर्यो पान चावि,
उदर गहलांमते डकार लैते आंमते॥



अब देखो रूप कैसो म्लेच्छपन्यो धरि लीयो,
पिल्ल मिल्ल ऊँठ धूँठ बर्क कह्यो जात है।
कोऊ लेओ, कोऊ खाओ, एक ही पिलेट मांहि,
मीठो नमकीन पूरी भात साग पात है॥
रसगुल्ला की चासनी में रायतो गड्डमड्ड,
वामें अचार चटनी, सोंठ हूँ समात है।
दही और तेल सब चासनी भकेल भयो,
देखो अंगरेज! खाय स्वाद लै लै खात है॥



म्हौड़े में ते उछटि कें परत पिलेट माँहि,
आँगुरी की गाईन में गिचपिच होत है।
चिपकत होठ तेज मिरच सों सी सी होय,
मन में तमस जागें, तन दुति खोत है॥
घासलेट जरें वाकी फैलत भुरींदि भारी,
मूँड़ चढ़ि आवें औ उवाकी मन होत है।
कहाँ गये दिन जब खाँड़ खीर माखन हे,
करि करि सुधि मनुआ तौ अब रोत है॥



धन्य मोरे देस दधि दूध के सरित बहे,
अब कहा भयौ तेरौ कैसौ ई कुरूप है?
तरसत बाल वृन्द, टकी वारौ दूध लावें,
पत्तां झौकि केसर कौ पेय ई अनूप है।
पोखरा कौ पानी, कभू मेंढकी हू आय जावें,
दही जो जमत वाकौ भिनभिनों सरूप है।
कहाँ जाँय देस वासी मिलें सोई लेंनो परै,
इतै गिरें खाई और उितै गिरें कूप है॥



-50, मोरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

भारत गाथा

बेस भूमा भारत की सुघर सुहानी हती,
धोती पै बगलबन्दी सीस पगा मोहते।
पगन में पानहीं, ललाट पै तिलक छाप,
बटुक गृहस्थ सुभ वेस मन मोहते॥
न्हाते नदी कूद सर वापी औ तड़ाग नीर,
पंचगव्य मर्दन सों तन तेज पोहते।
पचामृत पीते पूजा पाठ हरिचन्दन सों,
संयम सों बचते कराल काम कोहते॥



वाई देस मांहि अब भेस हू कुभेस भयो,
लगत हैं जुरे बाजीगर के जमूरे ज्यों।
बार बड़े रीछरा से तेल घृत डारत न,
दाढ़ी मूंछ बढ़त कुकुरमुत्ता घूरे ज्यों॥
दांतुन न करत सो दांत पीरे कारे भये,
उड़त लटूरा ग्रीष्म काल के भभूरे ज्यों।
कान बेलियान को सो कुर्ता औ गुसन्नी पैर,
हाट गली कूचरीन भँमत भटूरे ज्यों॥



चोड़ो सिगरेट औ सिगार दारू सौक भये,
लेत न ठडाई, पीमें चाय कौफी कोला हैं।
मन्दिर न जांय क्लब होटल औ रैस्टोरैन्ट,
करत पसन्द डिस्को ट्विस्ट रौक रोला हैं ॥
हिन्दी नांय सीखत न आवै आँग्ल भासा हू तौ,
देखो जो परीक्षा फल चारों ओर गोला हैं।
हिन्दुस्तान में तौ पैदा पोसित भये हैं पिर,
मन सों अँग्रेज रत्ती मांस और तोला हैं ॥



आर्यावर्त की जो सुसांस्कृतिक विसेसता ही,
एक हू तो रही ना या सतति के रक्त में।
नाती गिने जांय दार्सनिकन के पंथ काऊ,
ना तौ गणना ह्वै सके याकी काऊ भक्त में ॥
ना ये माने जांय निरासक्त औ विरागी त्यागी,
ना तौ इन्हें मानि सको भोगी औ आसक्त में।
ना तौ घोड़ा, ना ये गधा, खच्चर भलेई होंय,
जायकें परिगे काऊ न नी हो विभक्त में ॥



50, गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

आसतिकता कौ उर पायौ ना बिसाल घनों,
नासतिकता की बुद्धि हू तौ नाँय पाई है।
ना तौ भावना के धनी, नतरु बिचार वृद्ध,
कला काव्य कौसल की प्रतिभा न आई है॥
पायौ ना चरित्त-धन, सद्व्यवहार नाँय,
सेवा धर्म भक्तिभात्र की न रुचि भाई है।
इतनों ही भेद पसु और ऐसे जन माँहि,
पूँछ सीग नाँहि हरी घास नहीं खाई है॥



भारत माँहि स्वास्थ्य कौ तौ स्तर अतीव ऊँचौ,
तन मन स्वस्थ मस्त सुमन सों फूलते।
काम करते हे गीत गाते मौजमस्ती भरे,
खाते पीते आते जाते झूमते औ झूलते॥
खान पान सुद्ध तन सुद्ध मन सुद्ध हतो,
दुर्गुन जो देखते नसाते वाहि मूल ते।
आजु की या हालत सों तुलना करै जो कवि,
फटत है उर वेदना के पैने सूल ते॥



आजु देखौं युवक औ युवती या प्रौढ वृद्ध,
सवकौई हाल दीखै अजब वेहाल सौ।
चन्नत में टाँग लचि जाँय मानों गिरे अब,
माँस हीन तन लखैं अस्थि के कंकाल सौ॥
आँखि फटी फटी दोऊ गाल हू पिचकि रहे,
रूखे गोजरे से वार सीस कौ जजाल सौ।
दीखत है मानों कोऊ प्रेत है मसान माँहि,
जिन्दगी के वक्ष पै जम्यौ ऐ आय काल सौ॥



दीख परै कोऊ वाल जननी की गोद माँहि,
सोंक सी है टाँग तवला सौ फूल्यौ पेट है।
साँस ना समात, ढिबरात ढीढ़ भरी आँखि,
झुर्‌यौ सब गात भारी रोग की चपेट है॥
दूध ना उरोज तऊ चूँसत है रीती खाल,
भूखी माँत, भूखो तात, मौत की ही भेट है।
हाय मेरे देस तेरी संतति वेहाल भई,
तू हू है वेहाल अब कौन याय मेट है?



९0, गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

भारत

गाथा

देखौ वह वृद्ध, ना तौ दीखै, ना चल्यौई जाय,
कॉनहू ना काम देमें दोलर सरीर है।
चलत में कांपै लरखरात दोनों टांगन सों,
सांस हू समात ना दुसह्य तन पीर है ॥
पेट बांधि बांधि लै लै कर्ज जो पढ़ायौ पूत,
ह्वै कें अधिकारी भयौ भारौ ई बेपीर है।
पूत करै ऐश बाप भूखौ प्यासौ धक्का खाय,
हे रे मोरे देस ! तोरी कैसी तसबीर है ?



बूढ़ी मैया देख कें उठत उर हूक सी है,
नारी है या करुना नें अवतार लीनों है !
सूकी सब देह एक पिंजर है हाड़न कौ,
मौत हू न आवै ईस भारौ दुःख दीनों है ॥
झूठे दोंना चाटत बिड़ारि काग स्वान वृन्द,
हिन्द तेरे बासीन नें ऐसौ हाल कीनों है।
जामें कभू माता पिता तीर्थन सों बाढि माने,
वाई देस मांहि कैसौ रूप ई मलीनों है ॥



जामें दुलहिन कूँ अपार प्यार दीयौ जातौ,
याई देस माँहि अब हत्या करि देत है।
पैलें ठहरामें मोल बेटा कूँ नीलाम करे,
जाही विधि लूट्यों जाय खूब लूटि लेत है ॥
फेर कस्ट देमें वा पराई जाई बालिका कूँ,
माता पिता बेचत मकान अरु खेत है।
तौऊ तृप्ति होवै ना दहेज के पिसाच की तौ,
प्रान लै के बालिका के पूर्ण बलि देत है ॥



ब्याह मान्यौ गयौ संस्कार पूत प्रानन कौ,
अब वूही भयौ लाभ हानि कौ ब्यौपार है।
कोऊ कुल गोत्र संस्कार आदि पूछैं नाँय,
धन कहाँ मिले बस एक ही विचार है ॥
लज्जाहीनता की कछू सीमा अब दीखै नाँय,
दोऊ ओर होवैं कूट नीति कौ ब्यौहार है।
एक काट छाँट दूजी माँग कूँ बढ़ातौ जाय,
है ई संस्कार ? या ई बोली कौ बाजार है ?



0, गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

एक बात और कहूँ ध्यान सों समझि लेओ,
पैलें जो ज्योंनार होती मन हुलसामनी।
एक दिन पैलें सब जीमते आनंद पूरि,
नाच रंग राज गाजे बाजे गीत गामनी॥
अब एक नई रीत चली खूब सब ओर,
नाम दीयौ स्वागत जो नई वह आमनी।
घूँघट हटाय बहूरानी की प्रदर्शनी में,
कैसी निरलज्जता सों करत उगामनी॥



कैसे ये जवान अब सींकिया पहलवान,
बुझी बुझी आँखि और बैठे बैठे गाल है।
सींक जैसी टाँग तिन तंग पतलून पैरें,
उड़नछू कुर्ती कनकौवा के से बाल हैं॥
बीड़ी सिगरेट की बुकंदि मुख माँहि आवै,
गुस्सा की सरोट सों सिकुड़ि रहे भाल हैं।
हाय मेरे देस! तोय कहा ये निहाल करें,
हनुमान भीम केई देस के ये लाल है॥



गाली बिन बोलें नाँय, चलत में सीटी देयँ,
छेड़त पराई नारि मजनूँ के रूप हैं।
पढ़िबे में गोल कछू काम काज करें नाँय,
हाट गली नुक्कड़ के बिना ताज भूप हैं॥
इन्हें सीख दैबौ जैसें वानरा कूँ बया-सीख,
लक्ष्यहीन जीवन के मानों मूर्त्त रूप हैं।
धरती के बोझ काऊ जननी नें व्यर्थ जाये,
मन के मलीन अरु तन के कुरूप हैं॥



देखी कछू बालिका पढ़ाई हेतु जाय रही,
देख देख हाल मेरौ माथ झुक्यौ लाज सों।
तंग परिधान माँहि अंग अंग दीख रहे,
सिगरौ नारीत्व ढक्यौ मर्द जैसे साज सों॥
हल्ला सौ मचात, दाँत फारती फुलकती सी,
लगें अकुलीन निर्लज्ज सी आवाज सों।
हाय मेरे देस! जहाँ सीता औ सावित्री भई,
याई देस माँहि ऐसी बालिका को काज सों?



गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

मोरे देस माँहि सती साँडिली सावित्री भई,
ईस हू ते वाढि जिन जान्यौ निज नर को।
तजिवे की वात तौ सुपन हू में सोची नाँहि,
चरित के बल पायौ ईस हू के वर को॥
आजु वाई देस में विवाह कौ विच्छेद करें,
कलह कौ वनामें केन्द्र अपनेई घर कौ।
नारी मेरे देस की विदेसी चाल चलि रही,
नर कूँ तौ दीयौ रूप निज अनुचर कौ॥



कैसौ कलजुग मोरे देस में ही टूटि पर्यौ,
मैया सों तौ मम्मी कहें, डैडी पापा वाप सों।
चाची ताई भुआ माँई सवन सों अंटी कहें,
नरन कौ गड्डमड्डु अंकिल आलाप सों॥
गुड़ मौरनिंग गुड़ नाइट औ सौरी ओ० के०,
वने अँगरेज थैंक यू के ही प्रलाप सों।
निज भासा संस्कृति औ धरम भुडायौ सव,
कैसे उवरैगो मेरो देस ऐसे पाप सों॥



सिमून के नाम धरे टिकू पिंकू वन्टी डौली,
मेजे सिच्छा पाइवे कूँ मौड़िल स्कूल में।
अँग्रेजी यार नैंक टाई हैट बूट सूट,
अँग्रेजी कल्चर जमामें उर मूल में।।
ब्रेक फास्ट करें, लच लेवें औ डिनर खाँय,
पैन्हें कौस्ट्यूम जामें स्विमिंग कूँ पूल में।
फेर कैसें बालक बनेंगो सच्चो भारतीय,
आमन के फल कैसें लगिगे बबूल में।।



औरन हू देखी मैंम बनो बौब कट बार,
स्लीवलैस ब्लाउज में काँख चमकत हैं।
चौड़े नीचे कट में उरोज आवे दीख रहे,
उदर तो पूरे उघरेई दमकत है।।
पीठ दीखै, कटि दीखै, जंघा जानु पिंडली हू,
झीने तंग वस्त्र में नितम्ब छमकत है।
हे री भटू ! काहे कूँ इतेक हू ढके हैं तन,
नग्न है कें डोले तौ का हम पे रुकत है।।



50, गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

औरत हू पीवें सिगरेट, क्लब नृत्य करें,
पर पुरुसन संग ड्रिंक हू [illegible] हैं।
नाइट क्लब जांय, खेलें ब्रिज रमी फ्लाश हू,
नाचिबे कूं नर की [illegible] [illegible] हैं॥
नाती अब लाज मरजाद कहूँ रही [illegible],
नैतिकता छांडि [illegible] ह्वै [illegible] हैं।
कैसें लगै पार मोरे देस [illegible]
मेरी जानि [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] हैं॥

कैसें कहूँ वरद गिरा के वरदान इन्हें,
ये ददी फंदी गुटवाज ओसरवादी हैं।
पायौ है सुभाव चमगादड़ औ बक ध्यान,
आत्मश्लाघी निंदक औ भारे बकवादी है॥
इनके लिखे ते देस जन कौ न भलौ कछू,
जापै दृस्टि जाय वाकी करत बर्बादी हैं।
नयी नयी कहें टर्र टर्र बोलें दादुरज्यों,
चिर सत्य जानें नहीं, मौसमी मुनादी हैं॥



पत्रकार नाँय पहिले जैसे मर्यादावान,
नाती प्रतिभा है अरु नाँहिन आदर्स हैं।
कोऊ छपवावे सोई छापि देत धन हेत,
ब्लैक मेल करिवे कूँ छेरत संघर्स है॥
ना तौ स्वाभिमान अरु स्वस्थ ना समीक्षा करें,
सद्‌भावना कूँ छोरि पालत अमर्स हैं।
गिर गयौ स्तर सब भाँति पत्रकारिता कौ,
स्वार्थपरता के मान दंड दुरधर्स है॥



3. गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

भिच्छुक हू भये अब जेबकट चोर डाकू,
भिच्छा को तो नाम अब ऊपरी बहानों है।
कोऊ भये तस्कर उड़ात कोऊ सिसु वृन्द,
कोऊ झाँसो देत सोंने चाँदी कू उडानों है॥
भीख माँगि केऊ पीवत सराब और,
काऊ भाँग गाँजो सुलफा कौ रस आनों है।
ह्वै कें आप भिच्छुक तरेरें आँखि दाता पै ई,
हाय भगवान जाने कैसौ ई जमानों है?



साधून कूँ देखौ बे तौ पूरे स्वाद भोगी नर,
संत कौ तो चून यामें बाबा हू कहामें हैं।
चेलो करि राखें जुवतीन कूँ बिलास हेत,
सुलभ गृहस्थ कूँ ना, ऐसे सुख पामें है॥
सकि जाँय दिन माँहि, राति कूँ समेटो करें,
ढोंग औ ढकोसले सों मूरख बनामें हैं।
ना तौ तप, ग्यान औ ना आचरन तेज बल,
सुरग सी धरा कूँ हू नरक बनामें हैं॥



धरम को रूप तो विकरत पतित ऐसो,
भये धर्मान्ध साम्प्रदायिक दुरभाव सों।
हिन्दू औ मुसलमान सिक्ख जैन पारसी हू,
एक दूसरे की निन्दा करें भारी चाव सो ॥
हिंसा अत्याचार रक्तपात औ विनास भारो,
धर्म रीतो होत जाय सद्‌गुण अभाव सों।
चेनी भारतीय निज स्वर्णिम अतीत हेरि,
धर्म को उत्थान होवे सच्चे सद्‌भाव सों ॥



भारत के वैभव समृद्धि के प्रतीक चिन्ह,
क्षये जात विनको ध्यान कोऊ करें नांय।
बड़े बड़े मन्दिर जो धर्म औ कला के धाम,
रच्छन अभाव में जीर्ण सीर्ण भये जांय ॥
अजन्ता ऐलोरा जैसी भव्य औ विसाल गुफा,
बड़े बड़े दुर्ग गढी कोट हू क्षये जांय।
कोऊ न करत इन रच्छन उपाय कछू,
देस की महानता के स्तंभ हू ढये जांय ॥



, गोरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

कवि-उर में तौ पीर हूक सी उठत नित,
कहा मेरे देस कौ बनैगौ भावी काल में ?
पीढ़ी है निकम्मी जुम्मेदारी निज जानै नांय,
रह्यौ नांय तेज बूढ़े युवा अरु बाल में ॥
बूढ़े तौ चिपकि रहे रूढ़ि मृत मान्यतान,
युवा फँसे परे हैं विदेसी भ्रम जाल में ।
बाल वृन्द दिसाहीन सिच्छा ध्येयहीन मिलै,
दीखें परिनाम राष्ट्र पर्यौ बुरे हाल में ॥



उच्चतम् नेता हू भये ऐं जब भारी भिस्ट,
जनता तौ विनकेई पंथ कूँ गहत है ।
यथा राजा तथा प्रजा सत्य ई कहावत है,
करैंगी कुकर्म जो कुकर्म कूँ सहत है ॥
जल जैसे ऊपर न जात नीचे कूँई बहै,
वाई विधि भिस्टाचार नीचे कूँ बहत है ।
ऐसी कुव्यवस्था तौ मिटत जब हारि हूरि,
दुःखी है कें जनता विद्रोह मों दहत है ॥



सतोगुन रह्यौ नांय तम कौ प्रभाव बढ़्यौ,
खान पान चिन्तन विनास के ई दूत है।
बढ़्यौ मान धन पद और गुंडागीरी बानि,
बिलखि रहे हैं जो कलंकहीन पूत हैं॥
ऐसौई अधर्म तौ कीयौ कौरव हू ने नांय,
आजु वासों बढ़ि कें सराब और द्यूत हैं।
बूड़ि रही नाव मेरे देस की तौ रेत मांहि,
दीखें ना सपूत, एक संग सौं कपूत है॥



कहा करौ यार जब नाव कूं बुडाबे जानि,
नाविक ही जाके हाथ पतवार दीनी है।
यू ही घात करै जाकी गोद में विस्वास करि,
प्रानन बचाइबे कूं आ सरन लीनी है॥
जासों दवा माँगी रोग दूरि करिबे के तांई,
बानें पुरिया में बांधि विस बेल दीनी है।
गैर सौ तौ बचि जांय जैसें तैसे चाल चलि,
अब न बचेंगे अपनों ने घात कीनी है॥



गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

अपहरन करें वायुयान सस्त्र जोर सों,
हिंसा सों हिलाय देवें मानुस के धर्म को।
लूटें रेल कार बस ट्रक बैंक राहगीर,
मुद्रा धातु हेत करें हत्यारे के कर्म को॥
बहू बेटी संग बलात्कार से कुकृत्य होंय,
चलत कुचाल छाँड़ि कानि कुल सर्म को।
तुलसी बरवान्यों निज 'मानस' में कलिकाल,
हेरि हेरि हिया में समुझि रहे मर्म को॥



श्रवण कुमार के या देस माँहि देखो हाल,
मैया बाप भीख माँगें बेटा लाट साब है।
धोरेन में धूरि डारें काऊ की ना कानि कहूँ,
धता दें पुराने कूँ नये को ऐसो चाव है॥
काऊ पे तो भोन जो जिराये ते जिरत नाँय,
काऊ पे तो मूलभूत वस्तू को अभाव है।
काऊ की छिनन जाय कोऊ जोरें छीन छीन,
चहुँ ओर छायो कलिकाल को प्रभाव है॥



गामन में दीखतौ असलि रूप हिन्द कौ जो,
छाँड़ि के निसाँक नगरीय रूप धार्यो है।
मस्ती जिन्दगी की कहूँ रही नाँय नैकसीऊ,
बढ़त तनाव जग जीवन बिगारौ है।।
ऐसौ लगै दौरि रहे जानें कहाँ जनजूथ,
कोऊ काऊ कौ न सुनें कछू ना विचारौ है।
भारी भीर हू में जन लगत अकेलौ साँई,
गाँम के रहैया हू शहर रूप धार्यो है।।



पैले से त्योहार तीज मेले ठेले रहे नाँय,
जीवन की मस्ती हू बिलाई छल छंद में।
दौरि रहे जन काऊ अंधड़ के संग मानों,
स्वयं की हू सुधि नाँय फँसे दंद फंद में।।
ना तौ कोऊ ध्येय मानों भँवर फँसी है नाव,
खिंचे जामें काल चक्र गति हू अमंद में।
लोक में न सुख परलोक की हुवास नाँय,
कोल्हू की सौ बैल घूमें काऊ गुफा बंद में।।



, गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

यंत्र युग ऐसो जामें मानव हू यंत्र भयौ,
चाकर विज्ञान आजु स्वामी रूप धार्यौ है।
पैलें सेवा करत हो, आजु तू आदेस देत,
आग्नेय अस्त्र सान्ति सुख हू सहार्यौ है॥
जन जन उर माँहि उपज्यौ है अविस्वास,
हर्यौ भर्यौ बाग जाकौ आगि नें पज्यारौ है।
प्रगति विकास थुरौ नाँहि लगै काऊ कूँ हू,
परि याके नाम मों ह्यां यने कूँ उज्यारौ है॥



ऐसौ कोऊ मिलै नाँय जाके मन सुख होय,
सबई असान्त भ्रान्त क्लांन्त से दीख रहे।
सोंने के सदन, ऐस भोग सुख साधन हू,
पीड़ा के अयन में सब जन झीख रहे॥
भौतिक विकास सग ऊँचे गुन दीखें नाँय,
राति दिना गुनहीन औगुन सीख रहे।
पाय कें गुनत्रता नगाई आस चेतिवे की,
देख देख हाल ये दुदिन ही दीख रहे॥



पैले नर बात के धनी हे कभूँ चूकते ना,
बात हेत आन हेत प्रानन गमांमते।
अब नर नारिन सों गये बीते होंत जांय,
बात कूँ पलटते ना नेंक सकुचामते॥
मेंढकी की लात सम बात सों डरैना कोऊ,
पहिया ज्यों लढ़े कौ यों बात कूँ घुमामते।
नीति पुरखान की कूँ तोरते मरोरते हू,
ना तौ दीखें दूखते ना नेंक सरमामते॥



ग्यानवीर दानवीर युद्धवीर होते नर,
अब झूँठवीर है अग्यानी गुनहीन से।
बगला से बने कछू आँखि मीच ध्यान देत,
जो है कछू दूबरे सों कौर बने मीन से॥
कछू झोंपरी में दाने दाने कूँ तरसि रहे,
कछू राति दिना भोग बासना में लीन से।
एक ओर मोटे पेट बारे खून चूँसि रहे,
दूजी ओर प्रानन की भीख माँगें दीन से॥



गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

कहाँ गये राम जिन रांमन से दैत हने,
कहाँ हैं कन्हैया क्रूर कंस के हनैया हू ?
तीन अरु तीस कोटि देवता हू दुरे आजु,
जाने कहाँ छुपे जन लाज के बचैया हू ?
कोऊ गिरै याय और धक्का सों गिरावें सब,
आँसू पोंछे नांय कोऊ धीर के धरैया हू।
मरे कूँ ही मारें अरु शव की उतारें खाल,
ना तौ कोऊ सुनें नांय न्याय के करैया हू॥



आंधो पीसै चाकी वाके चून कूँ तौ स्वान खांय,
चोर संगी गिरहकट, को बचि पायगो ?
एक थैली के हैं चट्टे बट्टे षड्यंत्रकारी,
आसतीन को जो स्याँप कबू डसि जायगो॥
एक पल कूँ जो बिसवास कोऊ कहूँ कर्यो,
रोवैगो हमेसा सिर धुनि पछितायगो।
हाय मेरे देस ऐसे हाल में बता तू अब,
कौन तेरी भूमि पै जनम लेनों चाहैगो ?



रह्यौ होगो कभू तू सुरग कौ सौ ग्राम प्यारौ,
आजु तौ नरक सों हू बदतर हाल है।
जितै देखौ वितै कुआ बावड़ी के बीच फँसे,
चहुँ ओर फँसिबे कूँ फैल रह्यौ जाल है॥
एक सों चतुर दूजौ, धोबी मों का तेली घाटि,
न्हैला पै तौ घैला परै जीत कौ सवाल है।
याके हाथ मोंगरा तौ बाके हाथ लाठि थमी,
कोऊ कम नाँय भैया ! बुद्धि को कमाल है॥



पढ़िबे में तेज तोऊ तब तानू अंक नाँहि,
या तौ हो सिफारिस या मुट्ठी कौ गर्म करै।
जाँच होय कौपी कहाँ गई जाँचिबे के ताँई,
याकूँ भेट भाई दै कैं अंकन नर्म करै॥
प्रायोगिक मौखिकी के हेत जो पधारैं विप्र,
याकूँ खवावै माल कार कौ प्रबन्ध करै।
इतनों हू नाँय करै वापै कोऊ कैसैं ढरे,
कैसो हू मेधावी हो वाकी पार नाँय परै॥



), गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

जाही देस में मान गुनी जन कौ,
वाई देस में मान वढ्यौ धन कौ।
जामें पूजा के जोग गुरु जन हे,
वामें आजु महातम दुर्जन कौ॥
चाहे कैसेऊ दुस्ट लवार कहूँ,
यदि ज्ञान है तंत्र के पुरजन कौ।
झूठें सत्ता हथ्याय कें ऊँचौ उठै,
फेर काम निसंक करै मन कौ॥



जानें पायौ [illegible] पद ऊँचौ कहूँ,
वाके दुर्गुन लाम्र [illegible] [illegible] [illegible]।
झूंई मानी गुनी औ चरित्रवनौ,
याने कोऊ ना कीनें कहूँ [illegible] मे॥
चाहे दानव रावन [illegible] [illegible],
यदि जाय अनीति [illegible] [illegible] में।
यानों जूझन हेत [illegible] [illegible],
मु कहाँ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]



अति भारत रोमन देत नहीं, फिर जाय कहाँ अरु कौन सुनें ?
कित न्याय मिलै जो विचारे हुये, धनहीन की हालत कौन गुनें ?
जापै सत्ता है अर्थ हू म्हाईं रहै, सब लोग चुनाव में वाय चुनें।
कहूँ ऐसो कँड़ेरी मिल्यौ ना इहाँ, धरि ताँति पै रुई सी इन्नें धुनें ॥
सब भूत भये अब लातन के, मरिहैं न कछू अब बातन सों।
ये हैं नंग बड़े परमेसुर सों, नहीं चूकें कभूँ निज घातन सों ॥
नर मारि कें हाथ हू धोमें नहो, फिर पूजा करें बिन हाथन सों।
ये तो मानिंगे यार निकारि छुरा, कोऊ खाल उतारिहै गातन सों ॥



जिन दाँतन दाने सों बैर परे,
पुरखा तरसे नित ढोंड़ेन कूँ।
वेई लाट बने सिर ऊँचो करें,
नाँय सूधी करें निज म्होंड़ेन कूँ ॥
अब माँगत दैन-दहेज घनो,
लाये व्याहत सुन्दरि मोंड़ेन कूँ।
फै भूमि करें निज श्वान के नाम,
और दादा बनावत लौंड़ेन कूँ ॥



, गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

या तौ राम सहाय करैं तौ बनें,
ना तौ बूड़ी यैं बात ई देस गयौ।
अब पौंच्यौं रसातल औंधौ पर्यौ,
याके भाग कौ सूरज अस्त भयौ॥
जो हौ शान पुरातन धूरि दबी,
पुरखान कौ गौरव भूल छयौ।
कवि के उर आरति भूरि भई,
जो पै चाहत है, नहिं जात कह्यौ॥



द्रुपद सुता की लाज जाती सों बचाई स्याम,
धाये सुनि आरत पुकार गजराज की।
रावन विनासे साधु संत हू उबारे भूरि,
दौरि आये चित चिन्ता करी जन लाज की॥
देख रहे कहा दसा भई त्यारी पुन्य भू की,
कैसी बिगरी ऐ याके राज औ समाज की।
आओ प्यारे कान्ह औ बचाओ निज मात कूँ तौ,
सोंने की चिरैया बनी कौर अब बाज की॥



हेरे मेरे राम ! धनु बान धारि आओ दौरि,
सीता सम भारत की भू है दैत्य जाल में।
रावन से राकस करत ज्यों अनीति भीति,
तिलफत भक्त जन परे काल गाल में ॥
कपट छदम छल मार काट रक्तपात,
दीखत अनीति अनयाव चाल ढाल में।
कैसे भातौ होयगौ वैकुंठ कौ परम सुख ?
देख देख जन्म भू कूँ व्यथित बिहाल में ॥



हे रे प्यारे कान्ह ! दौरे आये गज तारिबे कूँ
द्रोपदी की लाज हू बचाई वेग आय कें।
अघासुर बकासुर पूतना सों राखे जन,
जहाँ दीन रोये म्हांई रच्छा कीनी जायकें ॥
कबहूँ न लाज मरजाद खोई त्यारे राज,
साधू संत सदाचारी रहे सुख पाय के।
अब कहा भयौ, भैरे भये टेर सुनों नांय,
कैधों सोये घैरा नीद घुटी भांग खाय कें ?



ग्रोरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

भारत

गाथा

दौरे आओ नाथ ! औ बचाय लेओ बूड़ी नाव,
त्यारो लीलाधाम हू नरक बन्यौ जात है।
देव-भूमि भई अब मलिन दनुज-थली,
सांच गुन धरम सुकरम नसात है॥
लीने अवतार लीला धाम जो ललाम भयो,
वाकी ऐसी दसा हेर हियरा दुख्यात है।
बूड़्यो त्यारो देस तौहू नाम त्यारो बूड़ि जाय,
देस ई नसात त्यारो जस हू नसात है॥



जगनाथ भया करिहौ इतनी,
निज भागा कूँ मीरा कें गौरव हो।
यह देस बनें वर वाटिका सी,
खिलहें नित फूल सुसौरभ हो॥
जननी सी जनें सुत पांडव से,
नही काऊ की कूँख ते कौरव हो।
ई हिन्द बनें सुरराज को धाम,
अरी-घर घुटि घुटि रौरव हो॥



भगवान इतनी बीनती कवि-प्रान की सुनि लीजियो।
ई जनम भू प्यारी जननि, सुखधाम हो वर दीजियो॥
संतान सब मिलिके रहें, प्रभु आ सरन में लीजियो।
दुख नीर-निधि में बूड़ते हत देस कूँ बल दीजियो॥



भगवान निसि दिन हिन्द में सद्भाव के सोते बहें।
नित गान गाते अरु विहँसते, जो मिले, उसको गहें॥
हमसों कहैं कोऊ कहै कछु पै कटुक हम ना कहें।
विस्व उपवन के सुमन हों नेह सों हिलमिल रहें॥



गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

. भारत

गाथा

हे ईश ई भारत पतन उन्नति बनें औ बढ़ चलें ।
उत्थान के सोपान नित प्रति वीरता संग चढ़ चलें ॥
हम लक्ष्य को पा जांय अरु दुश्मन हमारे कर मलें ।
शुचि जन्म भू के अंक में सद्भाव सों सब जन पलें ॥



प्राचीन में जो सत्य है, शिव रूप सुन्दर अरु सुखद ।
रक्षण करें वाको, हटायें जो कछु गरहित दुखद ॥
जैसे धर्म में जी रहे हम अति सुखद सुन्दर बनें ।
सब जगत में सब जनों पर नेह-वातायन तनें ॥

●

भावी समै सबकूं सदां वरदान ज्यों सुचि सुभ रहे।
भगवान मेरे देस में सुख सांति नव सरिता बहे ॥
यदि कहूँ कछु हो अनैतिक प्रबल गति सों नास हो।
जगत भर के काऊ जन पै अपर कौ नहीं त्रास हो ॥



हे ईस सब बनि जांय नैतिक, नीति धरि आगे बढ़ें।
देस के सब अंग मिलिकें प्रगति सिखरों पर चढ़ें ॥
करम सों सब बरन बनिहैं, स्वस्थ जन कौ वास हो।
सब चलें ब्रह्मचर्य पथ पै, सद्‌गृहस्थ संन्यास हो ॥



गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

धरम बंधन जाति बंधन भेद कित हूँ नहिं दिखें।
देश के इतिहास में नव जागरन हित गुर लिखें॥
सब समृद्ध सुखपूर्ण हितकर और निष्ठावान हों।
निज जनम भू हेत सब हँसते भये बलिदान हों॥

●

आज जित दीखत पतन अति, कल वहीं उत्थान हों।
भगवान भारत भूमि हित, सब भाँति सों कल्यान हों॥
देश हित रत और निज भाषा सबन कूँ प्रिय लगे।
भगवान मेरे देश को शुभ भाग सब विधि सों जगे॥

●

पतन हू उत्थान वनि कें देस को सम्वल वनें।
सुनारि मेरे देस की सत-पूत औ दुहिता जनें ।।
हो वर-वधू में नेह औ, दाम्पत्य में शुचिता रहे।
फूले फले यस की सुरभि भूधाम पै नीकी वहे ।।



धेनु-धन वाढे, स्वेत क्रान्ति सों समृद्धि होय,
कृसक हमारे स्वावलम्वी सव भाँति सों।
रूढि, ढोंग अध विसवास सों मुकति मिलै,
ग्यान औ विवेकजुत काम करें स्वाँति सों ।।
सवकूँ पढाई अरु प्रगति विकास हेतु,
सम अधिकार, कोऊ पिछरै ना पाँति सों।
गाँधी हो समाजवाद, हिन्द वासी भैन-भैया,
होवै ना लराई धर्म, वर्ग, वनें जाति सों ।।



दौरनदर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

ऐसो आवै जुग जामें सबई सुखी औ तुस्ट,
सब हों निरोग सबही कूं कर्म-ज्ञान हो।
ना तो कोऊ द्वेष करै कितहू काऊ के संग,
सबकूं सदाई ईस नाम कौ ई ध्यान हो॥
सेवा होय गऊ देव अतिथि औ वृद्धजन,
दीनहीन दुर्बल के रक्त कौ न पान हो।
सब जग मांहि जो जै कार मेरे देस कौ हो,
हिन्द के बसैयान कौ सब जगै मान हो॥



ईस कूं मनाऊं जगदीस ध्यान मांहि लाऊं,
जनम-जनम पुन्य पुंज की दुहाई है।
तारो मोरे देस कूं, उबारो, गर्त मांहि डूब्यो,
प्यारे लीलाधाम की उपाधि याने पाई है॥
लेऔ अवतार, मारि डारो जो दनुज होंय,
फारि डारो कालिमा जो पापतम छाई है।
पतन औ पाप सों कराहि रह्यो मेरो देस,
आय छिटकाओ छवि पुन्य की जुन्हाई है॥



× × ×
दसरथ नदन रामजू, नंदनँदन घनस्याम।
आजु पतित अति दुखित है, त्यारी लीलाधाम॥
× × ×
सोने की चिरिया बन्यौ, जो चँहक्यौ सानन्द।
माटी कीचड़ में सन्यौ, फँस्यौ कुगति के फन्द॥



× × ×
विस्व गुरु बनि पुज्यौ हौ, जगत उजारौ कौन।
आजु मीखिहै जगत सो, माँगत है बनि दीन॥
× × ×
मोरी बिनती नाथ ई, हे त्यारी ई धाम।
करि किरपा अपनायके, फिर चमकाओ नाम॥



लोरतवर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

भारत विकास

फहर रह्यौ ध्वज गगन में, लहरत मन आनंद।
प्रान जाँहि परि रास्ट्र कौ, गौरव रहे अमंद॥
× × +

जन जन कौ मन भाँमतौ, फूलि रह्यौ जनतंन।
जुरि मिलि सब पूरौ करो, नव विकास कौ मंत्र॥
× × ×

जन जन कौ कल्यान होय, भारत बनें अजेय।
मम निस्ठा सद्‌भाव सों पूरन होवै ध्येय॥
× × ×

o

लहर लहर लहरे भुजा, फहर फहर फहराय।
जन गन मन गुंजित गगन, जन जन मन हरसाय॥
× × ×

आयौ भलौ सुराज ई, घर घर मगल मोद।
भरी सुनहरी फसल सों, जनम भूमि की गोद॥
× × ×

गाम गाम बिजुरी जुरी, कूप देत जल धार।
हीरा मोती निपजते, पूरि रहे भंडार॥
× × ×

o

गौरनगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

हुयौ जो विकास वाकौ स्वागत करत कवि,
और हू विकास होय सब जुटि जाओ रे !
भूलि भेद जाति-पाँति धरम करम के हू,
एक मैया जाये भैन भैया बनि जाओ रे !!
देस है महान ई तौ और हू महान होय,
माथे तांई स्वेद-बारि मोती बिखराओ रे ।
याही एकता सूँ बोझ टरि जांहि होंन पार,
लै के सद्भाव उर, नाम चमकाओ रे ॥

बाल पाल लाल दादा भाई मोती मालवीय,
बापू औ जवाहर पटेल जंग जीत्यौ है।
जाके ताँई फाँसी फंद चूम्यों हो भगतसिंह,
सेखर सु जीवन संघर्ष माँहि बीत्यौ है॥
नेता जू सुभास चंद रक्त सों जराई जोति,
नर नारी बाल वृद्ध तन रक्त रीत्यौ है।
तब कहूँ प्रानन के मोल सों करयौ है क्रय,
पायौ है सुराज जन जन मन चीत्यौ है॥



धनि धनि मेरौ देस जानें ऐसौ नाम पायौ,
गुट निरपेच्छ साँचौ सब ही कौ मीत है।
काहू सों न रारि, दीनी कुमति निवारि काज,
सब ही के सारि ऐसी हिंसा हीन नीत है॥
"जीओ और जीने" दो कौ साँचौ विसवास जामें,
वसुधा कुटुम्ब कौ अटूट जाकी रीत है।
मीत कौ तौ मीत साँचे जनन सों प्रीत, नासौ—
अरि की अनीत काऊ सों न कोऊ भीत है॥



मौरनदर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

भारत गाथा

ऊँचे मुक्त नील नभ माँहि जाके निसि द्यौस,
सुभग तिरंगा ऊर्द्ध-गति फहरात है।
देस के सिपाही भाई भाई सब भेद भूलि,
याकी मान राखिबे कूँ हियौ हुलसात है॥
जाति पाँति धरम करम सों हैं न्यारे न्यारे,
मनुओं में तौऊ नेह नद लहरात है।
एक उपवन केई विटप सुमन सब,
जस की सुवास सों जगत महकात है॥



नेही सों नेह औ वैरी सों बैर,
सो जैसे कूँ तैसोई रूप धर्‌यो ऐ।
साय झुकै जु गुनीजन हेर कैं,
औगुन सोप के कूप पर्‌यो ऐ॥
देखौ निसर्ग निहाल भयो,
जाके अंगन रूप अनूप भर्‌यो ऐ।
भारत भूमि भलाई के भाव सों,
विस्व की आँख महत्व कर्‌यो ऐ।

नित खल्यान में सम्पति भूरि औ,
धूरि में मोतिन माल जगी ऐ।
धेनु कौ दूध पीयूस की धार सु,
पीवत प्रानन प्रीत पगी ऐ॥
पादप पाँतिन वेल सु चौरिन,
ठौरनि ठौरनि आँखि लगी ऐ।
स्वेद के बुन्दनि कुन्दन से तन,
दीनता देस कूँ छोरि भगी ऐ॥



नित में खल्यान में औ गाँव गाँव ठाँव ठाँव,
देखौ बदलाव जु सुतन्त्रता ने दीनों है।
रेतन के टीले अब हरे भरे वाग वने,
ऊसर जमीन उपजाऊ रूप लीनों है॥
जहाँ जन बूँद बूँद पानी कूँ पियासे मरे,
म्हाँई सर कूप कौ प्रबन्ध भूरि कीनों है।
दीख रह्यौ जनता कौ जनता के हेत राज,
लोक कौ कल्यानकारी राज ई नवीनों है॥



लोरवदर, भारत विश्वविद्यालय, सागर—470003

जुरि मिलि काम करौ, भेदभाव दूरि धरौ,
एक जननी की सब आँखिन के तारे हैं।
हिन्दू और मुसलमान, सिक्ख या ईसाई सब,
भारत के भैन भैया प्रानन सों प्यारे हैं॥
ध्यान राखौ देस को कुनाम कहूँ ह्वै न जाय,
देस की सुतंत्रता के सभी रखवारे हैं।
अमर तिरंगा प्यारौ नभ फहरायौ करै,
तब ई कहामैं हम हिन्द के दुलारे हैं॥



सबन के न्यारे काम न्यारे नाम न्यारे ठाम,
न्यारे न्यारे रूप रंग तऊ सब एक हैं।
भाषा भेद धरम के भेद परिधान भेद,
भारत की संस्कृति के रूप हू अनेक हैं॥
ऐसी या अनेकता में एकता बिराजै सदा,
एक दूसरे के हेत भाव सदा नेक हैं।
एक तरु के से फूल बनिकै रहेंगे सदा,
भेद बरतैगो जाय पंगति सों टेक हैं॥



चारों ओर होय हरियाली मेरे देस माँहि,
नेत पथ गाँव गली वृक्ष लगवाओ रे।
हरे भरे वृक्ष कहूँ कोऊ काटि पावें नहीं,
पसु पंछी हेत उर नेह सरसाओ रे॥
देस को कानून कहूँ भंग नहीं होनें पाय,
रोज रोज जनता कूँ विधि समझाओ रे।
साँचो अनुसासन कठोर श्रम दूर दृष्टि,
देस की प्रगति हेत इन्हें अपनाओ रे॥

●

विद्या सों विहीन नर पसु सम मान्यो जात,
विद्यावान जहाँ जात म्हाँई पूज्यो जात है।
ज्ञान के प्रकास से उजारो चहुँ ओर होत,
ज्ञानहीन जीवन दुख्यारो ह्वै नसात है॥
गाँव गाँव भारत में शिक्षा को प्रबन्ध भयो,
पू तो है अभागो सिसु वृन्द न पढ़ात है।
ऐसे या विज्ञान की प्रगति वारे जुग माँहि,
पिछड़ि न जाओ कहूँ, जग भग्यो जात है॥

●

[illegible], सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

सीखौ कछू काम, जासों देस कौ विकास होय,
निज कौ भलाई और देस कोऊ नाम है।
घर के तौ खीर खांय, भलौ मानें देवताऊ,
आम के तौ आम अरु गुठलीन के दाम है॥
उत्तम है खेती व्यवसाय यासों ऊँचौ नांय,
चाकरी तौ अधम अशुद्धता कौ धाम है।
भारत के भैया श्रम गौरव कौ पाठ पढ़ौ,
देस के विकास सों बनिंगे सब काम है॥



बढ़तांई जाय मेरौ देस सब छेत्रन में,
एक बेरि फेर बनें जग सिर मौर है।
स्वावलम्बी बनें औ अभाव सब दूरि होंय,
देवे खुसहाली ही दिखाई ठौर ठौर है॥
और देस मांगें जो सहायता तौ देतौ रहै,
हर देस वासी दानी बनें पौर पौर है।
हिन्द देस विस्व के गुरु कौ पद पावे फेर,
हिन्द के समान हिन्द, नहीं कोऊ और है॥



छुआछूत भूत भाग्यौ, देस कौ सुभाग जाग्यौ,
करम सों हेत लाग्यौ देस ई महान है।
काऊ तरियाँ कौ कोऊ भेदभाव रह्यौ नाँय,
न्याय औ कानून सब हेत ह्यां समान है॥
कोऊ होवे धरम औ भासा चाहे कोऊ होय,
औसर समान और एक संविधान है।
मासन कौ मान रहे, ऊँचौ स्वाभिमान रहै,
प्रानन सों प्यारौ निज देस कौई मान है॥



भयौ ऐ विकास मेरे देस माँहि ओर ओर,
राज पथ बने पगडंडिन के ठौर हैं।
दूरि दूरि बसे गाँव जुरे यातायात हू ते,
रेलन के रेलपेल मोटर हू दौरि हैं॥
बने है मकान आलीसान गली गैलन में,
चौकदार बाखरि में बने पौरी पौर हैं।
जहाँ कभूँ रेतन के टीले बेसुमार हते,
म्हाँई अब बागन में आमन के बौर हैं॥



..लय, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

ऐसो ई सुराज जामें जनता को राज भयो,
पंच सरपंच औ प्रधान चुने जात हैं।
जिले में प्रमुख अरु राज में विधायक हू,
जनताई सासन के हेत पहुँचात हैं॥
जन को ई राज जन ही के हेत जन द्वारा,
साँचो जनतंत्र याई देस में लखात है।
पराधीनता में जिन टूकन के लाले परे,
तिनकोही थारीन में आजु दारि भात है॥



जहाँ अँधियार माँहि घूँघट में घुटी नारि,
म्हाँई अब जगमग जोतिन के जाल हैं।
नर नारि माने जात एक से, ना भेदभाव,
याई विधि प्यारी लागी जैसे प्यारे लाल हैं॥
काँधे सों जुराय काँधो काम करें नर-नारि,
स्वेद जल बूँदन सों बीतगे अकाल हैं।
गाँव मेरे देस के सुराज में सुरग बने,
हिन्द के रहैया सब भाँति सों निहाल हैं॥



म्हौरे है कुटुम्ब भली भांति ह्वै वै पोसन हू,
गांव गांव पढ़िवे को भर्यो भारी चाव है।
छोरी छोरा सब विना भेद विद्या पाय रहे,
काऊ तरियां को कहूँ रह्यो ना अभाव है॥
खेतन मे ट्यूबवैल पानी देत ऊरपूर,
रूढ़िवाद-छूटिगो विज्ञान को प्रभाव है।
काऊ की ना धौस अब सोसन सों मुक्ति भई,
गांव के बसैयान को बदल्यौ सुभाव है॥

●

गामन में गंदगी के ढेर जो लगत हुते,
जन हू कें पसु तुल्य जिन्दगी बितामते।
कोल्हू के से बैल निसि द्यौस पिरतेई रहेते,
रखो सूखो वासी कूसी पामते सो खामते॥
आजु विन गामन की छवि हेर रीझै मन,
दीखें नर नारी खाते पीते गीत गामते।
हरे भरे खेत अरु बागन के बीच बसे,
भारत के गांम सुरधाम से सुहामते॥

●

गान गाँम गाय बैल झूमरे ई दीस परें,
चहूँ ओर हरे भरे खेत लहरात है।
दधि-की बिलोमनी में रई को घमर नाद,
लोनी को जो स्वाद वाकी अनकैनी बात है॥
कोऊ नाय दीन हीन काऊ पै ना रिन भार,
साँचहू सुतंत्रता की भारी करामात है।
हाँ रह्यौ बिकास दिन दूनौ राति चौगुनौं सौ,
गामन के जीवन मां सुर्ग हू लजात है॥



देस को बिकास भारौ गामन में दीख परें,
फूँस की ही छानि, म्हाँपै आजु पक्के धाम हैं।
पक्की पटसाल, डाकखाने अरु अस्पताल,
पंचायत हू के घर सोभित ललाम हैं॥
बनी हैं दुकान भर्जे हाट पक्के बाट बने,
गामन के भैयान कूँ सबई आराम है।
सोने की चिरैया फेर बन्यौ आज मेरौ देस,
होत है सुनाम जब सब करें काम है॥



गाँम वारे भैयान कूँ करूँ राम राम मैं हू,
सव सों मोय इतनों ही आजु कहनों है।
देस की प्रगति अरु सवको विकास होय,
याके ताँई खेतन कूँ स्वेद वारि देनों है ॥
मिलि जुलि काम करें भेदभाव दूरि धरें,
सीत घाम सवन कूँ एक संग सेनों है।
नवई कहिंगे जग वासीन सों ताल ठोकि,
हिन्द ई हमारो सव विस्व को गहनों है ॥



आओ भैन भैया या विकास माँहि जोग देओ,
मैया ऐ हमारी हम सव याके वाल हैं।
हिन्दू औ मुसलमान सिक्ख औ ईसाई सव,
आँखिन के तारे और याके प्यारे लाल हैं ॥
खूब उपजाओ अन्न, फल फूल दही दूध,
स्वेत हरी क्रान्ति के तौ दीपत कमाल हैं।
छोरे परिवार राखौ, पोसन उचित होय,
देस हू निहाल देसवासी हू निहाल हैं ॥



भयो जो विकास वामें छति नाँय होन पावै,
और हू बढ़त जाय ऐसो संकल्प लेओ।
कोऊ काऊ के न कहूँ मुख्न के कौर छीनें,
स्वयं हू जीओ और औरन कूँ जीन देओ॥
पेट अपने सों कछू बचै तो बचाओ रोज,
जो है कछू दूसरे तिनकूँ सहारो देओ।
सबरे भैयाऊ जब एक से बनिगे सब,
देस हू बनैगो ऐसो प्रन सब लै लेओ॥



चहुँ ओर हुयो ऐ विकास हिन्द देस माँहि,
जहाँ अँधियार हतो अब ज्योति जागी है।
संतति अनेक जिन सोतो रूढ़िवादिता में,
वेऊ अब जागे औ प्रगति रुचि लागी है॥
सिच्छा को अभाव हुतो पसुवत् जीते जन,
अब जन जन हाँपै सिच्छा अनुरागी है।
जाके जाये बेटा बेटी अबहू न माला जाँय,
ऐसो हिन्द माँहि कोऊ मात ना अभागी है॥



खुलि गये सिच्छा केन्द्र गाँव गाँव ठाँव ठाँव,
सबकूँ समान अधिकार राज दीनों है।
चाहे हो धनिक या गरीब भैया होय कोऊ,
सिसु पामें सिच्छा सो प्रबन्ध ऐसौ कीनों है ॥
लरिकान संग कन्या पावत प्रवेस अब,
सह सिच्छा देस माँहि भारौ हित चीन्हों है।
बाल-बालिका के बीच रही जो दीवार पैलें,
अब अवरोध सब राज तोरि दीनों है ॥



अध्यापक पद हेत वेतन बढ़्यौ ऐ अब,
नूतन भवन सुविधाऊ खूब बाढ़ी है।
पाठ्यक्रम बने अब देस काल अनुरूप,
देस सिच्छा छेत्र में अनेकों से अगाड़ी है ॥
कोऊ अब रूढ़िग्रस्त अंध को विस्वासी नाँय,
नातौ जड़ रह्यौ कोय नतरु अनाड़ी है।
देस खुसहाल बनें याके ताँई जन जन,
निरठाराग करि रहे महनत सुगाड़ी है ॥



सक्ति कौ विकेन्द्रीकृत रूप जनतंत्र माँहि,
सारे विस्व से हू यादि भारत में आयौ है।
गाँम गाँम माँहि बनी पंचायत जन प्रिय,
पंच सरपंच न्यायपंच पद पायौ है॥
पंचायत समिति प्रधान जिला प्रमुख हू—
जन प्रतिनिधित्व कौ रूप मनभायौ है।
राज्य में विधायक औ सांसद सपूरे देस,
इनसौं ही लोकतंत्र साँचौ रूप पायौ है॥



देस की संप्रभुता है संसद के माँहि पूरी,
संविधान कौई मान सबकौ दायित्व है।
राष्ट्रपति देस कौ सर्वोच्च पद सोभमान,
हर राज्य संघ सों सम्बद्ध हू स्वायत्त है॥
देस कौ प्रधान मन्त्री कार्यपालिका कौ धनी,
मंत्रिमंडल माँहि सारी सक्ति समाहित्य है।
व्यवस्थापिका तौ करै देस कौ कानून पास,
कार्यपालिका में वाकौ पालन निहित है॥



खुलि गये सिच्छा केन्द्र गाँव गाँव ठाँव ठाँव,
सबकूँ समान अधिकार राज दीनों है
चाहे हो धनिक या गरीब भैया होय कोऊ,
सिसु पामें सिच्छा सो प्रबन्ध ऐसो कीनों है।
लरिकान संग कन्या पावत प्रवेस अब,
सह सिच्छा देस माँहि भारो हित चीन्हो है
बाल–बालिका के बीच रही जो दीवार पैलें,
अब अवरोध सब राज तोरि दीनों है।

●

अध्यापक पद हेत वेतन बढ्यो ऐ अब,
नूतन भवन सुविधाऊ खूब बाढ़ी है।
पाठ्यक्रम बने अब देस काल अनुरुप,
देस सिच्छा छेत्र में अनेकों से अगाड़ी है॥
कोऊ अब रुढ़िग्रस्त अंध को विस्वासी नाँय,
नातो जड़ रह्यो कोय नतरु अनाड़ी है।
देस खुसहाल बनें याके ताँई जन जन,
निस्ठामग्न करि रहे महनत गाढ़ी है॥

●

[illegible]
...नगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

सक्ति को विकेन्द्रीकृत रूप जनतंत्र माँहि,
सारे विस्व में हू याहि भारत में आयो है।
गाँव गाँव माँहि बनी पंचायत जन प्रिय,
पंच सरपंच न्यायपंच पद पायो है॥
पंचायत समिति प्रधान जिला प्रमुख हू—
जन प्रतिनिधित्व को रूप मनभायो है।
राज्य में विधायक औ सांसद सपूरे देस,
इनसों ही लोकतंत्र साँचो रूप पायो है॥



देस की संप्रभुता है संसद के माँहि पूरी,
संविधान कोई मान सबको दायित्व है।
राष्ट्रपति देस को सर्वोच्च पद शोभमान,
हर राज्य संघ सों सम्बद्ध हू स्वायत्त है॥
देस को प्रधान मन्त्री कार्यपालिका को धनी,
मंत्रिमंडल माँहि साँची सक्ति समाहित्य है।
व्यवस्थापिका तो करै देस को कानून पास,
कार्यपालिका में याको पालन निहित है॥



न्यायपालिका है पूरे तौर पै सुतंत्र अरु,
न्यायाधीस निर्विवाद माननीय मुक्त हैं।
कार्यपालिका के अधिकारी सेवा भाव युत,
संविधान केई अधिकारन सों युक्त है॥
जन नेता देस के आदेस जनता को मानि,
विविध विभागन सों होमें वे संयुक्त है।
याई तरियाँ सों सब देस को प्रबंध चलै,
कोऊ ना अधिकार कर्त्तव्य सों वियुक्त है॥



पाये अधिकार मूलभूत देस वासीन नें,
तिन्हे छीनवे को काऊ कूँ न अधिकार है।
सब अधिकारी न्याय पाइवे के ताईं इहाँ,
सबकूँ समानता सुतंत्रता सों प्यार है॥
सब ही समान संविधान न्यायपालिका कूँ,
नाँही भेदभाव नाँही कोऊ अत्याचार है।
औसर समान हैं विकास औ प्रगति केरे,
पिछड़े वर्ग कूँ आरक्षण अधिकार है॥



(कविरत्न संग्रह - १९३४)
सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

जुग जुग सों जो वर्ग पीड़ित औ शोषित है,
पशुवत भारे अत्याचार रोज होमते।
करन बेगार बंधुआ के रूप उम्र भर,
मार खायकें ऊ नाहिं कोऊ कहूँ रोमते।।
वे भी जागतेई रैन काटते दुन्यारे भारे,
गुलगुले गद्दान पै तौ शोषक ही सोमते।
धनि धनि पाई जो सुतंत्रता पै बलि जाऊँ,
मुक्त भये सब जन शोषण के जोम ते।।



आजु कोऊ काऊ को न स्वामी नातो सेवक ही,
सब हैं समान मोंठ बड़ी नाँय मोंठ ते।
कोऊ कहूँ आजु थरथरात ना विलोकियें,
उठत जो रोष आगि माथे की सरोट ते।।
नानो डरै कोऊ तोपखाने घुड़दौड़ हू ते,
नाहीं डर रह्यौ अब गढ़ीगढ़ कोट ते।
कोऊ करि घोषणा चुनाव को प्रचार करि,
उच्चतम् पद पाय सकत है वोट ते।।



चाहे बनो सांसद विधायक प्रशासक या,
राष्ट्रपति बनों या श्रमिक या किसान ही।
खुली प्रतियोगिता समान अधिकार सबै,
काऊ की बपौती नाँय पद मान शान ही॥
जेती चाहो सिच्छा लै प्रसिच्छन हू पाय लेओ,
कोऊ बनें पंच कोऊ बनत प्रधान ही।
कोऊ व्यवसाय पद कौसल कला हो कोऊ,
सम अधिकार न्याय दिये संविधान ही॥

●

सबन कू सिच्छा मिलै बिना काऊ भेदभाव,
प्रौढ़ सिच्छा हू की परबन्ध राज कीनों है।
नर नारी सग संग बिना भेद पढ़ि लेओ,
सबकू सुनैरी लाभ प्रजातंत्र दीनों है॥
बीते दिन जब सिच्छा पाते हे बिसेस वर्ग,
अब तो ई सुधा पान सबन कू पीनों है।
बीते दिन जब जीते ठाट सों बिसेस जन,
अब सुखी जीवन सबन कू ई जीनों है॥

●

[illegible] (कविता सतई : 1974)
[illegible] विश्वविद्यालय, आगरा—4[illegible]

पैलें कर्ज देते साहूकार अरु बोहरे ई,
अंधाधुन्ध चक्रवृद्धि ब्याज वे वसूलते।
जमा खर्च मनमाने ढंग सों दिखावते वे,
कर्जदार को तो खून चूसि चूसि फूलते॥
ये तो दीन होते जाते, पैदा सब ब्याज में ई,
वे तो बाग बगीचान झूलान पै झूलते।
अब भयौ रामराज शासन कौ चक्र नांय,
सब देशवासी भैया फलते औ फूलते॥



कर्ज मिलै बीमा अरु बैंक संस्थान तेऊ,
ब्याज दर समीचीन किस्त बांधी जात है।
अग्रिम मिलै सो वासों काम-धाम करौ कोऊ,
भिन्न व्यवसाय हेतु राशि मिल जात है॥
रोजगार हेत अब नाम पंजीकृत होंय,
कैऊ ऐसी संस्थायें जो मार्ग दरसात है।
नागरिक काम पामें देस को उत्थान होय,
लोक कल्यान कारी राज सो कहलात है॥



काऊ चीज वस्त की कमी हो देस माँहि कभूँ,
सही वितरण होय राशन के काम हैं।
जगै जगै खुलत दुकान वस्तु केन्द्र खूब,
कार्ड बने लिखी जात संख्या अरु नाम हैं॥
याई तरियाँ सों करि दूरि सब तंगी पीर,
सुखी हो समाज करें ऐसे इन्तजाम हैं।
घर बारे खीर खाँय, भलो मानें देवताऊ,
आमन के आम औ गुठलीन के दाम है॥



देस कौ किसान जो आधार सब देस को ऐ,
वाकूँ सब भाँति सों विकास फल देत हैं।
उन्नत सुबीज अरु खाद को प्रबन्ध होय,
जोत औ बुवाई को प्रबन्ध करि देत है॥
फसल कहूँ जो काऊ कारन सों गिर जाय,
म्हाँ पै भूमि कर की वसूली छोरि देत हैं।
सोंने सी फसल होय कृषक समृद्ध होंय,
ऐसोई प्रबन्ध अधिकारी करि देत हैं॥



[illegible] (कविता मंडल : 1974)
... सागर विश्वविद्यालय, सागर—470003

आजु मेरो देस जगती को सिर मौर बन्यो,
लहरत जाके मुक्त नभ में तिरंगा है।
फहरन जाकौ जग अनिल तरंगन में,
वन्दना के गीत गामें जमुन सुगंगा है॥
हिमगिर सीस कौ किरीट मन भावनों सौ,
जन जन तन पुलक्यो ऐ मन-चंगा है।
जन गन मन धुनि गूँजि रही ओर छोर,
लहरायो उत्तछल जलधि तरंगा है॥



एक भर्यो पूर्यो बाग सोहत हमारो देस,
विविध विटप बेल सुमन सुहात हैं।
धरम अनेक वेसभूसा खान पान भेद,
ऐसी है अनेकता सुरंग सरसात हैं॥
पाई है विविधता में एकता जो मेरे देस,
वाकी सरि कोऊ देस कहूँ न करात हैं।
हिल मिल सोहत ज्यों हार में विविध फूल,
विविध हैं वाद्य एक धुनि में समात हैं॥



चाहे कोऊ वोली वानी आंचर औ प्रान्त कोऊ,
जाति पाँति कुल कोऊ धरम धरैया है।
एक मातृ-भूमि वाके सुवन सकल हम,
भेदभाव भूलि सब सगे भैन भैया है॥
ऐसे कछू संस्कृति के प्रान हैं सुधा सों सने,
झेलि झेलि झोंका ये तौ आज हू जिवैया है।
पाय के सँजीवनी सुधा सों ऊर पूर ह्वै कें,
भारत के वासी प्रेम भाव सों रहैवैया है॥



बढ़तोई जाय मेरो देस सब छेत्रन में,
एक बेर फेर बनें जग सिरमौर है।
स्वावलम्बी बनें औ अभाव सब दूर होंय,
देवै खुसहाली ही दिखाई ठौर ठौर है॥
और देस माँगे जो सहायता तो देतो रहे,
हर देस वासी दानी बनें पौर पौर है।
हिन्द मेरो सोंने की चिरैया बनि जावै फेर,
हिन्द के समान हिन्द, नहीं कोऊ और है॥



[illegible] (कविता संग्रह : 1974)
[illegible] विश्वविद्यालय, सागर—470003

भारत

माता

मेरे देस मांहि गंग जमुन की धार बहै,
हिमगिरि माथ पै मुकुट भर्यो गहनों है।
चरन पखारतो सो जलधि हिलोर लेत,
मंद मंद सीतल समीर को बहनों है॥
ऐसे देस मांहि रात दिना को विराम अब,
सब देस मानिगे भारत को कहनों है।
याके जो सिद्धान्त विस्व सांति के तांई बने,
जिनसोंई विस्व कूं कुटुम्ब रूप देनों है॥



बेर बेर टेर कहै देसवासी सुनि लेओ,
करो जोहू काम ताहि याई विधि कीजियों।
फलै फूलै हिन्द याके बासी खुसहाल रहैं,
भेद की दीवार सात मारि तोरि दीजियों॥
कोऊ जाति होय चाहे कोऊ होय धर्म ह्यांपै,
सबकूं सहोदर ही मानि उर लीजियों।
करि सहयोग सद्‌भावना सों आगे बढ़ि,
नेह के सुधा को रस हिन्दवासी पीजियों॥



आजु सब देस याई देस कौ बतायौ पथ,
मौनि के सही औ साँचौ वाई पै चलत है।
तीसरौ जो विस्व गुटहीन विस्व साँति नेही,
याई के नेतृत्व माँहि फूलत फलत है॥
हिन्द नें सुतन्त्रता के चार दसकन माँहि,
ऐसौ दीनौं पाठ कोऊ काऊ ना छलत हैं।
सब कूँ सुतन्त्रता समानता औ बंधु भाव,
साँचें नेह माँहि सद्गुण ही पलत है॥

●

पंच बरसीय योजना कौ जो प्रारम्भ भयौ,
वासों देस बासीन की दीनता नसात है।
कृसी सिच्छा रोजगार हेत धन व्यय होत,
हर देस वासी वाको भारी लाभ पात है॥
अन्य देस माँहि जो विज्ञान की प्रगति भई,
चलत उद्योग धन्धे धन हू बढ़ात है।
भारत की योजनायें विनहू कौ लाभ लेत,
प्रगति विकास के सुपंथ देस जात है॥

●

[illegible]
[illegible]

भारत

गाथा

पैले गाम दीखत हैं गंदगी के भरे धाम,
पसुवत जीवन जो जन ह्यां बितामते।
कीट बुलबुलात दुर्गन्ध भरी नाली माँहि,
वाही भाँति मानव हू भारी दुख पामते॥
अंध विसवास औ अग्यान कौ अँधेरो घनों,
वामें परे जन दिन राति अकुलामते।
अब कोई जन सिच्छा पाय या उजारे माँहि,
दीखत हैं खुसहाल पीमते औ खामते॥



सासक विदेसी वे तौ धन लूटिबे कौ ध्येय,
लै कैं देस वासीन कूँ सोसन में सानते।
अपनेई देस कूँ वे भेजते हे भारी धन,
यू ई करते जो तिनकेई मन मानते॥
आजु देस अपनों ऐ सासक हू वे ई जन,
जिनकूँ निकट तेई मतदाता जानते।
अपनों जो धन यू तौ अपनेई काम आवै,
देस अपनों है बढ़ि कैं ऊ निज प्रानते॥



पैले भासा विनकी ही मान पाती चहुँ ओर,
थाने औ कचेरी शाला और काम काज में।
आँग्लभासा पढ़े जन माने जाते ऊँचे भौत,
विनकूँ ई ऊँचे पद मिलते हे राज में॥
अब चहुँ ओर निज भासा को सनेह जाग्यौ,
मातृ भासा पूज्य भई राज औ समाज में।
भारत के भेन भैया त्यारौ ई कर्त्तव्य अब,
हिन्दी को प्रयोग करौ सब काम काज में॥



जनप्रिय देस सरकार को कर्त्तव्य भयो,
हिन्दी भासा टंकन के यंत्र को प्रयोग हो।
आँग्ल भासा टंकन के यंत्र हटि जांय सब,
हिन्दी भासा टंकन के ज्ञातान को योग हो॥
आंचलिक भासा हू विकास करि आगे होंय,
काऊ कूँ विदेसी भासा को न यहूँ रोग हो।
देस भक्ति बढ़ै भासा भक्ति को सहारो पाय,
देस सेवा माँहि सबकोई मनोयोग हो॥



भारत की भामा सब सरित उमग भरी,
मिलि जायें जायकें सु हिन्दी पारावार में।
उत्तर के वासी कोऊ भासा दच्छिनी ऊ पढ़ें,
दच्छिन के भैया हिन्दी पढ़ें पूरे प्यार में॥
भासा मातामही संसकृत कोऊ मान बड़े,
याकी महिमा को गायन होय संसार में।
भासा सों ही देस के चरित्र को बचाव होय,
भासा की महिमा भारी देस के सुधार में॥



भारती की आरती में वंदना के गीत गवे,
मानस में रीझि रीझि सबकूँ रिझाय लें।
रस के अपार पारावार माँहि बूडि बूडि,
तलहू में जाय मनि मानिक जुटाय लें॥
भूलें सब बैर औ विरोध बिसराय देवें,
एक दूसरे कूँ आन कंठ सों लगाय लें।
भारत के भैया सब भेदभाव भूलि जाँय,
एक जुट है कें अब हिन्दी अपनाय लें॥



[illegible] (: 19[illegible])
[illegible] विश्वविद्यालय, [illegible]

सागर तरंग पद पंकज के पायजेब,
उर हू को हार गंग कलित कलिन्दी है।
हिमगिरि सीस को किरीट कमनीय बन्यो,
चातक चकोर पिक मोर मनों बंदी है॥
स्यामल सुरम्य धरा अंचल सुहाय रह्यो,
इन्दु अरविन्द मोहें आनन अनन्दी है।
ऐसो रूप राशि पै विराजत पीयूष पगी,
हिन्दी मेरी जननी के भाल की सुबिन्दी है॥



चाहे तुम कैसे हू अनूठे काम करि लेहु,
करि मख सत पुन्य इन्द्र पद पाओगे।
तिहुँ लोक सागन को बाग डोरि थाम लेहु,
सागर हू मथि चाहे चौदं रत्न लाओगे॥
और कछू पाय जाओ, छाय जाओ विश्व माँहि,
सूरज औ चांद को निचोरि सुधा पाओगे।
और हू असंभव सों संभव बनेगी परि,
भारती कूं भूलि भारतीय ना कहाओगे॥



कन्नट तमिल तेलगु अरु मलयालम,
ऐसी ऐसी समृद्ध सुरम्य वर भासा हैं।
डिंगल औ पिंगल ढूँढारी अरु हाड़ौती हू,
निज निज छेत्र की मुखर अभिलासा हैं॥
ब्रजभासा तीन लोक मोहिनी सरस मंजु,
अवधी पंजाबी सिन्धी भोजपुरी भासा हैं।
सम्स्कृति की अम्बुधि लहर रही ऊर पूर,
भासा नाँहि ये तो इन जनन की स्वांसा है॥

●

और हू अनेक उपभासा बोली बानी मंजु,
हिन्दी के पयोधि कूँ भरनहार धार हैं।
इनके विकास सों ही हिन्दी की प्रगति होय,
देसवासी-उर माँहि सब हेत प्यार हैं॥
सब माँहि गीति नीति विविध विचार भाव,
सब येई न्यारे-न्यारे सुघड़ त्यौहार हैं।
ये तो सब रसराजे सुमन सुहात प्यारे,
हिन्दी के सुरम्य वक्ष ही के चारु हार हैं॥

●

[illegible]
[illegible]

होयगो विकास मेरे देस को अनेक गुनों,
जब सब देसवासी चरित बनाएंगे।
व्योपारी बनिज माँहि शुद्धता को ध्यान करें,
दूर हो उचित मिलावट सों बचाइंगे॥
जहँ विश्वास कोऊ कहूँ सों खरीदें वस्तु,
सब जगै ग्राहक उचित दर पाइंगे।
ना तो कोऊ कम तोलें नाही कर बचना हो,
हम हू बनिगे अरु देस हू बनाइंगे॥



दूध दही घृत साग फल फूल शुद्धता हो,
देसवासी तन और मन सों हू स्वस्थ हों।
रहै ना तनाव अरु मानसिक शान्ति पाय,
गाते गाते काम करिबे के ई अभ्यस्त हों॥
दूर होंय पापाचार अनाचार अत्याचार,
ढोंग औ पाखंड सब मून सों ही ध्वस्त हों।
नर नारि बाल-वृन्द कुसुम कली औ फूल,
देस के उत्थानकारी कामन में व्यस्त हों॥



देस के विकास के तौ होवें मूल सिसु वृन्द,
याही काल माँहि संसकार हू जमत है।
ऐसौ करनौ है इन्तजाम परिवार माँहि,
छोरे जन बड़ेन के सामने नमत है॥
मैया सों ही सीखें सिसु मांगलिक सुभ बात,
ऐसे सिसु वृन्द माँहि ईस ही रमत हैं।
प्राथमिक सिच्छा होय चरित सिखान हारी,
वासों भावी काल के विचार हू थपत है॥



सिच्छा कौ विभाग पुन्य धाम अति पावन हो,
सिच्छक बनें वू जो चरितवान नर हो।
निज आचरन सों सिखावें सद्गुन सिस्य,
ब्रह्मचर्य आस्रम में साला गुरु-घर हो॥
तोता की रटन्त छोड़ि जीवन के पाठ पढ़ें,
मान मरजादा करतव्य में सुघर हो।
तम सों प्रकास माँहि लावै विद्या सिस्यन कूँ,
सत्य-सिव-सुन्दर सों जीवन अमर हो॥



अरमान (कविता संग्रह : 1974)
[illegible] विश्वविद्यालय, [illegible]

आजु की जो पद्धति चलाई है परीच्छा लागि,
यू तौ अर्थहीन कोरी नकल विदेस की।
तीन तीन घंटा में विसय को ज्ञान जाँचत,
औ चाहे परीच्छा लेंनों सद्गुण असेस की॥
सपूरे व्यक्तित्व की परीच्छा होय रोज रोज,
जाँच करी जाय खान, पान, सोच, वेस की।
सरवतोमुखी हो जो विकास सिच्छा पायकें,
तौई नाव पार लगे बूढ़ती या देस की॥

●

सिच्छा की समबन्ध अब जुरै व्यवसाय से,
विज्ञान कौऊ भाग हो समें की ई चाह है।
अपनों जो सोंनों यू हू पास अपने ई रहै,
चले चलें दौरि जो नवीनता की राह है॥
कूदें और चूवक लै देखें हम बेर बेर,
ग्यान के या सागर की केती औड़ी थाह है।
जानें ढूँढें वानें पाये पैठ धार मुक्ता माल,
ध्येय पाइबे कूँ वहै सिच्छा को प्रवाह है॥

●

मानत है कवी सिच्छा देस में वढ़त जाय,
खूब है विकास याको चहुँ ओर देस में।
परि याकौ स्तर गिर्‌यौ ऐ, उर सोच भारी,
काहे कूँ नकल करें है रह्यौ विदेस में ॥
जुरि मिल जन नेता सिच्छक औ गुनी जन,
नई सिच्छा पद्धती चलामें नव वेस में।
गिनती के संग जब गुन की बढत होय,
तवई चरित वल वढैगौ सुदेस में ॥

●

भारे हू उद्योग जो चले हैं सो चलन देओ,
जिनसों विकास की अमंद गति ह्वै रही।
संग में कुटीर धंधे गामन में पुरि जांय,
वहैं देस वासी जैसी विस्व में हवा वही ॥
स्वेद की सुबूँदन से सिंच सिंच सस्य पूरि,
सोने की उपज सों उमंगित, हो देस मही।
मेरे देस वासी ऐसे साहस सों पूरित हों,
गलत कूँ गलत औ सही कूँ कहें सही ॥

●

[illegible]
[illegible]

गाथा

राष्ट्र-माँहि होवै सुद्धता सुनीती साँच,
तबई विकास की गुलाब मन्न पाँइगे।
साँचो निरमान, वामें कछु छल छद्म हो न,
नहर औ बाँध कूप सर काम आँइगे।।
देस के विकास के सुस्तंभ अभियंता जूथ,
सही लै सीमेन्ट साज सृजन कराँइगे।
ठेकेदार श्रमिक औ कारीगर कर्मचारी,
सब साँचे होंय तो विकास करि पाँइगे।



देख देख देस को विकास मोय आस बँधै,
मेरो देस आजु काऊ देस सों ना कम है।
बढतोई जाय तकनीक औ विज्ञान माँहि,
अणु सक्तिमान अब काऊ कूँ न भ्रम है।।
आधुनिक हिन्द के सृजक तौ नेहरू बने,
इन्दिरा के नेतृत्व में भयौ अनुपम है।
बढती जो नाव वाकी थामी पतवार अब,
युवा रक्त माँहि बढिबे को दमखम है।।



देस में बीभत्स क्रूर कृत्य कर्यौ हिंसा युत,
विस्व कौ प्रकास-पुंज छायौ तम-तोम नें।
रोय परी धरा, गिरि सागर सरित सर,
खेत खलिहान रोये, आह भरी व्योम नें॥
जाने देस हित बलिदान कीयौ प्रानन कौ,
दीनी है गवाही ध्रुव रवि अरु सोम नें।
याके सिम कीये काम प्रान दै कें पूरे करें,
लीनी है सपथ कवि के तौ रोम रोम नें॥



जो हो उनमादी बुद्धिहीन रूप दानव कौ,
याकी है न जाति कोऊ याकौ नाँय धर्म हू।
काहे कूँ बिगारौ मेरे देस कौ आदर्स रूप,
काहे कूँ भुलान जात याकौ उर-मर्म हू?
निज देस वासीन कूँ मारि के फलौगे नाँय,
कुतसित भावना औ कुतसित कर्म हू।
देसवासी भैया भैन एक भैया जायें सब,
छोड़ौ उनमाद और छोड़ौ दै अधर्म हू॥



हिन्दू औ मुसलमान सिक्ख औ ईसाई जैन,
बौद्ध पारसीऊ इन आँखिन के तारे हैं।
गुरुद्वारे गिरिजाघर-मन्दिर औ मस्जिद,
हिन्द के बसैयान कूँ प्रानन सों प्यारे हैं॥
सबन के धर्म जैसें बाग में सुमन पुंज,
मंजु सुचि सरस सुरभि उर धारे है।
एक प्रान राजत हैं नेह के सुधा सों सने,
ऊपर सों तन चाहे दीखत ये न्यारे हैं॥



देस कौ विकास एकता के सद्भाव सों ई,
एक माला जामें भाँति भाँति के सुमन हैं।
मन तौ हमारे एकता के सुधा ऊर पूर,
भिन्न चाहे रंग रूप धरम औ तन है॥
भासा भेद, प्रान्त भेद भूलि कें गले सों मिलि,
करों बलिदान देस हित तन-मन हैं।
देस है महान याके बासी हू महान जन,
सांन्ति औ अहिंसा सों सुसिक्त कन कन है॥



हिंसा को चलन प्रतिकूल मेरे देस के तो,
हिंसा माँहि लिप्त कैसें हिन्द के बसैया है ?
तोड़-फोड़ मारकाट लूटपाट आग जनी,
कारज ये निन्दनीय कौन करवैया है ?
ऐसे दानवीय कृत्य करत वे राकस हैं,
देस के विकास की गती कूँ रुकवैया है।
सबकूँ सपथ राम, नानक मुहम्मद की,
लरौ भिरौ मति, सब सगे भैन-भैया है॥



आओ भैया भैन मिलि जुलि कें सपथ लेओ,
देस ई हमारौ प्रान हू सौं हमें प्यारौ है।
धुज है तिरंगा मुक्त नभ में लहर लेय,
जन गन मन राष्ट्र गीत सुखकारी है॥
जाके तांईं बलि चन्द्रसेखर भगतसींग,
बापू औ सुभास नेहरू सास्त्री प्रान वार्यौ है।
इन्दिरा हू वेदी पै सहीद ह्वै अमर भई,
हर हिन्दवासी याकौ आजु रखवारौ है॥



प्रजातन्त्र पद्धति सों जाकी है जवाब देही,
याको सब मंग देओ देस के विकास कूँ।
थोथी निन्दा करें वे तो देस की ई हानि करें,
प्रजन की दीठ सों बढ़ाओ विसवास कूँ॥
कोऊ होय दल चाहे कैसी हू विचार धारा,
सब याके सिसु, मति, तोरो याकी आस कूँ।
रक्त स्वेद स्रम देसभक्ति विस्वसांति, नेह,
मानवता हेत बलि देओ सांस सांस कूँ॥



कोऊ जन होय वासों देस बड़ो माननों है,
स्वार्थ कूँ छोरि देस कोई नाम करनों है।
याके छेत्र छेत्र मांहि सबको विकास होय,
जहां है अँधेरो मिलिकेंई सो हरनों है॥
रित्त याकी कोस काऊ कारन सों भयो होय,
करिकें स्रम देसवासीन कूँ भरनों है।
याही में जनम लीओ अन्न जल तन मांहि,
याही के सुनाम कूँ हँसि हँसि मरनों है॥



कैसो हो सौभाग सब भैन भैया हिल मिल,
खूब करें काम औ सुनाम बढ़े देस को।
सबसों सनेह कोऊ काऊ को ना घात करै,
देसी वेस धारें त्यागि विदेसी कुवेस को॥
एक होवै जाति हिन्दवासी कहलायें सब,
एक हो धरम दूर करें पर-कलेस को।
भारती के मन्दिर में पूजा मनुजाई की हो,
कोऊ देस कभू ना सतावै काऊ देस को॥



काऊ छेत्र माँहि कोऊ ना तो बेईमानी करै,
साँची होय काम औ मजूरी खरी खूब हो।
मब जन करें निज काम जुम्मेदारी मानि,
ऐसो काम मिलै नहीं जासों वाकूँ ऊब हो॥
सुख भाग सम अधिकार सात हों न पाँय,
मानुस कूँ दारि रोटी पसून कूँ दूब हो।
घर घर माँहि गाड़ी बैल हल टैक्टर हों,
हर कूँप माँहि धन्न मोटर को ट्यूब हो॥

भारत
माता

देस के सुनागरिक भूलें ना कर्त्तव्य कभूँ,
संविधान को तो मान सबई कर्यौ करें।
कृसक हमारे स्वेद बूँदन सों सींचि सींचि,
देस के भंडार हीरा मोती सों भर्यौ करें॥
गैया बैल खेत कुआ श्रम सों विकास होय,
कल कारखाने समस्यान कूँ हर्यौ करें।
कर पूर जल उमग्योई करें खेत क्यार,
जगमग जोति तम तोम कूँ हर्यौ करें॥



बालक युवा तो भावी कर्णधार देस के हैं,
तिनकी सिच्छा औ स्वास्थ्य पर सब ध्यान दें।
पढ़ि लिखि बनें ये सपूत औ सुपुत्री सब,
मैया दाऊ बड़ेन कूँ सदा पूरो मान दें॥
खामें पीमें सुद्ध सतोगुनी बनें ज्ञानवान,
नम्र स्वाभिमानी सब छाँड़ि अभिमान दें।
निज भासा संस्कृति औ रीति नीति नेही होंय,
जन्म भूमि हेत भीतिहीन ह्वै कें प्रान दें॥



संसदीय प्रजातंत्र सफल बनत जब,
मतदाता जानें निज मत के प्रताप को।
ना तो हो दबाव नाहीं दंद फंद भेद होंय,
कोऊ करै नाँय घूँसखोरी हू के पाप को॥
होय कोऊ योग्य, गुनी चरित को सुद्ध नम्र,
ऐसो हो निरपच्छ पच्छ लेबै नहीं बाप को।
बिजयी बनें औ काम करै देस हित मानि,
सेवा करै जनता की दूरि करै ताप को॥

●

देस की बिधायिनी बनावै नेम धर्मयुत,
कार्यकारिणी को काम लागू करवानों है।
न्यायपालिका हो मुक्त भीतिहीन सक्तिवान,
तोरै जो कानून वासों दंड भरवानों है॥
प्रथक्करण सक्ति को तौ न्याय हितकारी,
वामें सहयोग तीनों अंगन समानों है।
जनता के हेत, जनद्वारा जनता को राज,
साँचे प्रजातंत्र को सुजस यों बखानों है॥

●

[illegible] (... ... - 1974)
[illegible]

नेता नीतिधारी बनें दूरि करिबे कूँ दुःख,
जोरें नहीं धन घूँसखोरी व्यभिचार सों।
जेती हो सम्पत्ति वाको लेखा जोखा साफ रहै,
जोरे नहीं हेत दुराचार अनाचार सों॥
भासन औ बाटन न्यतरु उद्घाटन् में,
समै नहीं खोमें निज ख्याति के विचार सों।
ऊँचे हों आदर्स, कहें सोई करें भीतिहीन,
दूरि रहें झूँठे साँचे सस्ते भुप्रचार सों॥



काम जो विभाग की सुपुर्द हो प्रभारी हस्त,
वामें हस्तक्षेप जननेतान की भूल है।
ऐसे प्रतिमान अपवादहीन वनि जाँय,
भंग करिबे सों प्रतिक्रिया प्रतिकूल है॥
कर्मचारी हों या अधिकारी, निज काम करें,
सेवा की दसा तो सब हेत अनुकूल है॥
तब मेरे देस की प्रगति अर्थवान बनें,
देस के विकास की सुनाव लगे फूल है॥



चाटुकारिता की चाव काऊ के न चित माँहि,
　　　　　　हनन चरित्त को श्रुनित अपराध है।
निन्दा करिबो तो निसश्च्य नीति मानी जाय,
　　　　　　झूठें दोसारोपन दनुजता की साध है।।
नाम जो विरोधी दल, कहँ सहयोगी तिन्हें,
　　　　　　देस हित माँहि राखें श्रद्धा हू अगाध है।
मिलि जुलि काम करें, देस कूँ महान करें,
　　　　　　बात चीत सों हीं मिटै झगरो फसाद है।।



चिल्लपों मिटैगी जब सुखभाव सम होय,
　　　　　　देस में समाजवाद हिंसाहीन लानों है।
कोऊ लें इकार, कोऊ नाज-दांत बैर परे,
　　　　　　ऐसो भेदभाव वेग मूल सों मिटानों है।।
खूब पैदावार स्वेत हरित सुक्रान्ति लाय,
　　　　　　भूमि में सरसता की सोत हू बहानों है।
दूरि कै कुरीति, भीति, भेदभाव -आपाधापी,
　　　　　　एक बेर फेरि हिन्द सोने को बनानों है।।



[illegible]
[illegible]

सुजन कूँ सुख होय, सेवा मनुजाई विस्व,
सुख अधिकामें दुःख मूल सों नसि जांय।
न्याव हो समाज राज नीति पुन्य सिवधाम,
सबकूँ मुलच्छ्य निज जीवन के मिल जांय॥
सुजस समृद्धि स्वान्त सुख परलोक मोच्छ,
लोक परलोक हू सुफल बनत जांय।
धर्म अर्थ काम मोक्ष ऐसे घुलि मिल रहें,
देवता भलो मानें घर बैकुं वीर थांव॥



नव सिव साहित्य की रचना हो देस मांहि,
पाटन-पटन में हू वर ग्रन्थ काम सें॥
उषा काल में ही उठि सद नीर न्हाय धोय,
पूजा पाठ करें निज इस्ट कौऊ नाम सें।
दान पुन्य जीव दया बडेन की सेवा करें,
वर परिधान औ सुरुचि युत धाम सें।
नर नारी बाल वृद्ध नेह मनमान पामें,
सत् बरस जीमें फेर चिर आराम लें॥



[illegible]
[illegible] विश्वविद्यालय, [illegible]

जाको जोऊ धर्म होय याको निरवाह करि,
विना रोक थाम के खुसी को पारावार हो।
रोटी कपड़ा और मकान सुविधा सों मिलें,
वृद्धजन हेत कछू जीवन आधार हो॥
मैया दाऊ हीन कोऊ बालक अनाथ या कि,
विधवा, अपंग, आंधौ कैसौऊ लाचार हो।
ऐसों को प्रबन्ध करे राज औ समाज मिल'
वाऊ पै ना कहूँ नेंक्हू न अत्याचार हो॥



चिकित्सालय हों सब हेत थोरी थोरी दूरि,
सेवा हो निसुल्क जन जन रोगहीन हो।
वैद्य, उपवैद्य, डाक्टर, नर्स, कम्पाउण्डर,
हर एक सेवा भावी कर्म लवलीन हो॥
पंचायत, नगर की पालिका या परिषदें,
देखें सब स्वस्थ रहें, नहीं कोऊ छीन हो।
नियमित सफाई हो दवा छिरकाव करें,
कोऊ जगे कहूँ पै न नेंकऊ मलीन हो॥



राज नें प्रबन्ध सब करि दीनें ऊर पूर,
देखनों है कहूँ दुरुपयोग ना ह्वै पाय।
बिजुरी जरामें जेती उचित हो, शुल्क देमें,
देखें कोऊ नलहू कहूँ पै ना टूटि जाय॥
सार्वजनिक सम्पत्ती को नास कोऊ करै ना,
तोरै कानून .वाकी सूचना हू दई जाय।
पुलिस, प्रसासन कूँ सब सहयोग देमें,
असामाजिक तत्व बिना दंड रै है न जाय॥

●

देस सम्मान साहित्यकारन कूँ पूरो देय,
अध्यापक गुरुन को उचित सम्मान हो।
"जय जवान जय किसान" की बात भूलें नां,
मजदूर वर्ग कोऊ समुचित मान हो॥
जानें पायौ जनम सुनागरिक हिन्द को है,
जासों कहूँ देस को कभूँ न अपमान हो॥
ऐसे जन काऊ जाति धरम बरग के हों,
प्रगति विकास सुख औसर समान हो॥

●

मिटै युवा रोस, अनुसासन अखण्ड सान्ति,
सब समस्या के सुलभ समाधान हों।
दीनता समूल नासै, थमै अपराध-बाढ़,
नौकरी की खातिर न लोग परेसान हों॥
मँहगाई थमें सब चीज मिलें एक दाम,
छोटे परिवार ही गृहस्थीन की सान हों।
पूरे होंय ध्येय जब राज तौ प्रबन्ध करे,
जनता को सहयोग देवै को रुझान हों॥



राम औ रहीम गुरु नानक या ईसा देव,
बुद्ध महावीर सब वंदना के जोग हैं।
धर्म सब श्रेष्ठ होंय सबके सिद्धान्त ठीक,
भेदभाव पैदा करें वे निकृष्ट लोग हैं॥
दूजे के धरम की जो निन्दा करें पापी हैं वो,
नरक में जाँय भोगें नारकीय भोग हैं।
सब धर्म एक सम मानि मायो नवै जाको,
वाके ताईं सान्ति सुख सुलभ सुयोग है॥



सब धर्म ग्रन्थ बानी बोलें एक जैसी दिव्य,
भासा सैली भिन्न पै विसय वस्तु एक है।
ईस्वर है एक वाकौ भिन्न भिन्न रूप देख्यौ,
मारग अनेक परि गन्तव्य तौ एक है॥
फेर कैसौ मतभेद काहे की लराई प्यारे,
साधन अनेक तोऊ साध्य सांची एक है।
मोमें तोमें वामें भैया! भेद कहां दीख रह्यौ,
काया हैं अनेक तोऊ प्रान तत्व एक है॥



तन आतमा कौ परिधान, सो तौ नास जोग,
जीर्ण परिधान फेंक नूतन गहत है।
गीता में कही है भगवान नें जो बात सांची,
आतम अमर ब्रह्म रूप ही लहत है॥
नासी है सरीर वाके तांईं पाप किन करें?
चेतन प्रवाह सब काल में बहत है।
पानी ना गरावै आगि याहि ना जरावै ई तौ,
वायु ना बहावै गीता ग्यान यों कहत है॥



यासों लै कें सीख सब नेह सों निबाह करौ,
लरौ भिरौ मति सब ईस केई अंस हैं ।
भेजे दुनियाँ में कछू नेकनामी करिबे कूँ,
घात करें केतौ भारे क्रूर औ नृसंस हैं ॥
भारत की भूमि पै जनम लीयौ, अन्न खायौ,
ई तौ पुन्य भूमि जाये ईस अवतंस हैं ।
याकी सेवा करें वे तौ राम कृस्न रूप पावें,
घात करें जोहू वे तौ रावन औ कंस हैं ॥



यहै मत्र भैया भैन मानि लेऊ सीघ्र साँची,
देस सेवा सम कोऊ पुन्य ना अपर है ।
जीवें जन देस हित, स्वेद बूँद मुक्ता माल,
देस हित मरें सूई मानस अमर है ॥
रुधिर की बूँद बूँद देसहित काम आवै,
याकी ही रच्छा के हेत जीतनों समर है ।
यातें यति जोय कवि प्रान वेरि वेरि हँसि,
देस मेरो सुरग सों सुचि श्रेष्ठतर है ॥

भारत

भाषा

कटि कसि काम करिबे कूँ कूदौ कर्म क्षेत्र,
कोटि कोटि कर्मवीर काम करवाओ रे।
समै को सदुपयोग सूझबूझ साहस सौं,
शान्तिपूर्ण साधनों से समृद्धि सजाओ रे॥
देस के दारिद्र को दलन दूरदर्सिता सौं,
दलबन्दी दुष्टता दलन दुनकाओ रे।
भारत के भैया भैन भूरि भूति भक्ति भाव,
भू सौं भूरि भेदभाव भीति कूँ भगाओ रे॥



हरे भरे खेत दीखें परिधान बीच गोरी,
नवल सुनागरी सी भू नें साज साजे हैं।
तरु राजि लता गुल्म कलित कुसुम कुंज,
साथ साथ पंछी वृन्द गुंजत सु बाजे हैं॥
झूम झूम झूमें सर सरित सलिल मल्ल,
अचल सुचल वन वाटिका विराजे हैं।
लोक हितकारी जनतंत्र को विभव घर,
जन जन मन नवें गाजे अरु बाजे हैं॥



खिले फूल से हों नर किसलय सी नारि हों,
बाल वृन्द कलित कलिक सम सोहते।
सबके निवास साफ-सूफ खुले हवादार,
आँगन में लता पेड़ पौधे मन मोहते॥
ना तौ घर कलह केन्द्र रारि न पड़ौसी सौं,
सबन कूँ खाते पीते सब जन जोहते।
समै पै तो काम करें कसर न राखें कोऊ,
पाय अवकास हँसी मोद सों विमोहते॥



गामन सों बाहर बगीची सब ओर होंय,
बने हों अखाड़े कुआ बावडी तालाब हों।
आम नीम पीपल पपीता औ अनार नीप,
हरे हरे पेड़न सों पूरे सब चाव हों॥
साँझ कूँ चौपाल, चौक, थान, थाँई बैठें जुरि,
ग्रीस्म छिरकाव होंय जाड़े में अलाव हों।
ऐती सब बातन के संग संग ध्यान रहे,
विस्व माँहि ह्वै रहे जो बेऊ बदनाव हों॥



देस पिछड़्यो ना रहे संग चलै औरन के,
ऐसो प्रयास होय आगें हू निकरि जाय ।
ग्यान विग्यान अरु तकनीकी यांत्रिकी के,
छेत्रन की प्रगति में गती सों बढ़्यो जाय ॥
डामर सड़क जोरें हर गाम सहर सों,
यातायात अरु संचार बढ़तोई जाय ।
टी वी रेडियो कार-स्कूटर मोटर वाहन,
सब कूँ मिलें हर जन सुविधा कूँ पाय ॥

●

कवि-उर-चाह हिन्द सुरग सों बढ़ि जाय,
प्रगति विकास के सुमार्ग ह्यां प्रसस्त हों ।
सत कर्म नित नये कीर्तिमान पायो करें,
कर्म जो असुद्ध वे तौ मूलन सों ध्वस्त हों ॥
ना तौ हो उत्तेजिना, सैथिल्य दोस होवे नांय,
ना तौ कोऊ मूँड़ चढ़े नाहीं कोऊ त्रस्त हों ।
सब नागरिक निज काम सों ही काम राखें,
मस्ती समै मस्त अरु काम समै व्यस्त हों ॥

●

परिक्रमा दऊँ त्यारी गिरिराजें महाराज,
पौंछरी के चौंठा मेरे देस कूँ बचाइयो।
ब्रज राख्यौ बूड़तो सो बाई बिधि गज तार्‌यौ,
हिन्द बूड़्यौ जाय नाय ! नंगे पैर धाइयो॥
द्रोपदी की लाज राखी याकी हू तौ राखि लेऔ,
बिदुर की नारि कूँ ज्यों नेह बरसाइयो।
बंसी के बजैया स्याम नाग के नथैया छैल,
एक बेर फेर आन रास हू रचाइयो॥

सब देवतान कूँ मनाऊँ ब्रह्मा बिस्नु सिव,
निज निज धाम सों पधारौ हिन्द देस में।
बिगरी जो दसा याय आनि कैं सुधारौ नांय !
बिस्व गुरु बने याय पूजें देव बेस में॥
सरिता दही दूध की बहैं रत्नधाम बनें,
कोऊ रहवैया याको रहै ना कुवेस में।
राखै जो परम्परा, सही हों अतीत की हू,
करै अनुकूलन नवीन परिवेस में॥

देवताऊ स्वर्गधाम छोरि छोरि ह्याँपै आमें,
ऐसो प्यारो न्यारो देस हिन्द कूँ बनाइयो।
हर-हिन्दवासी हो चरितवान ग्यानी गुनी,
ऐसी नई पीढ़ी देस माँहि उपजाइयो॥
न्यारे न्यारे रूपरंग भासा औ धरम भिन्न,
सबकेई उर माँहि बंधुता जगाइयो।
कूड़ो करकट औ विद्वेस हिंसा फूट ग्लानि,
जरि जाय, आगि देस-भक्ति की लगाइयो॥



कर जोरि कें विनती करूँ करुना सदन सुनि लीजियो।
पूर्व-प्रभुता, नव उदय मम जन्म भू को दीजियो॥
प्राचीन जो सुन्दर शिवं औ सत्य सों अभिषिक्त हो।
हो समन्वित नव प्रगति सों, जो असुचि वो रिक्त हो॥
धन्य कवि के भाग भारत भूमि सी जननी मिली।
पाय सुचि उपवन धरा पै, मुग्ध उर कलिका खिली॥
रेत है चन्दन यहाँ को नीर अमृत धार है।
हर भवन तो हरियली है कर्म पूजा सार है॥



छाँड़ि याकी अंक कूँ को सुरग-अभिलासा करे ?
कवि हृदय की चाह है ह्याँई जिये ह्याँई मरे ॥
जन्म भारत भूमि पै औ मरन याकी धूरि में ।
तन वदन निसिदिन सने हों धूरि-जीवन मूरि में ॥

हो प्रगति नित नित नई हे जन्म भू ! मंगलमयी ।
प्यारे सुवन सुरभित सुमन सबके सुमन हों उर-जयी ॥
मोदमय मंगलमयी मृदुतामयी मनहारिनी !
फूलै फलै फलदायिनी मन मोद मंगल कारिनी ॥

भारत
गाथा

धनि भारत धनि भारती, धनि धनि कवि के भाग ।
महिमा पतन विकास लिख, प्रगट कीन्ह अनुराग ॥

× × ×

पराधीनता शृङ्खला, टूटी तम को नास ।
नव सुतंत्रता प्रात भो, फैल्यो सुभग उजास ॥

× × ×

जुरि मिलि जन जन जय करें, गूँजे जय जय कार ।
जन गन मन धुनि, धन्य तू, मुदित सकल संसार ॥

× × ×

●

स्रम सीकर सों सींचते, तरु विकास के मूल ।
उपवन मधुवन महकते, आतीं रितु अनुकूल ॥

× × ×

प्रभु सों इतनी बीनती, कान परे बिसवास ।
जनम जनम में दीजियो हिन्द देस को बास ॥

× × ×

●

हे जन्म भू ! मनस-भावन में वंदना के सुर बजे।
थाल सुरभित सुमन पूरित अश्रु मुक्ता सों सजे ॥
फूलो फलो फिर सों सुनहरी हो विहगिनि सुभसनी।
निखिल जग में सुजस फैले, चाह कवि-उर की घनी ॥



डा० रामकृष्ण शर्मा

एम.ए. (हिन्दी-अंग्रेजी) पीएच.डी.

जन्म – २२ अक्टूबर १९१६

शैक्षिक जीवनवृत्त –

प्रारंभ से अंत तक प्रथम श्रेणी ।
राजपूताना विश्वविद्यालय से स्वर्ण पदक प्राप्तकर्ता

प्रसारण –

आकाशवाणी दिल्ली, जयपुर तथा मथुरा से अनवरत काव्य पाठ, वार्तायें तथा अन्य साहित्यिक विधाओं के प्रसारण ।

कवि सम्मेलन –

अखिल भारतीय कवि सम्मेलनों में काव्य पाठ तथा संचालन ।

लेखन –

अखिल भारतीय स्तर की पत्रिकाओं तथा पत्रों में कविताओं, लेखों तथा अन्य विधाओं का प्रकाशन ।

मौलिक ग्रन्थ :—

१–भगवान महावीर महाकाव्य, २–काव्यानंद 3–सन्ध्या सूर्य, ४–भारत सतसई, ५–विकास सतसई, ६–[illegible]-काव्य-संग्रह, ७–सरस निबन्ध, ८–साहित्यिक निबन्ध, ९–उत्तम कहानियाँ, १0–भारतेन्दु-व्यक्तित्व और कृतित्व ।